هذا هو الإسلام - هندي

यह है इस्लाम

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي
233
هاتف: ٠١٦ ٤٢٣٤٤٦٦ - فاكس: ٠١٦ ٤٢٣٤٤٧٧
تعاوني الزلفي

यह है इस्लाम

هذا هو الإسلام - الهندية

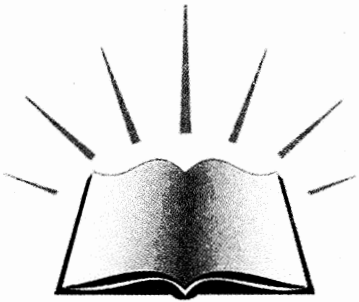

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد
وتوعية الجاليات بالزلفي

٠١٦٤٢٣٤٤٦٦

هذا هو الإسلام

أعده وترجمه للغة البشتو

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالزلفي

الطبعة الأولى: ١٤٣٩/٨هـ

ⓒ المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

هذا هو الإسلام – الهندية / المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي - الزلفي، ١٤٣٩هـ

٧٦ ص ؛ ١٢ X ١٧ سم

ردمك: ٩-٠٣-٨٢٤٣-٦٠٣-٩٧٨

١- الاسلام – تعليم أ- العنوان

ديوي ٢١٠,٧ ١٤٣٩/٥٧٧١

رقم الايداع: ١٤٣٩/٥٧٧١

ردمك: ٩-٠٣-٨٢٤٣-٦٠٣-٩٧٨

भूमिका

यदि इन्सान इस धरती पर सोच विचार करेगा जिस पर वह सांस लेता है और इस महान व विशाल संसार पर नज़र डालेगा, आसमान और उसमें मौजूद अनगिनत सितारे जो एक बड़े महान व्यवस्था के तहत सफर कर रहै हैं, ज़मीन और उसपर मौजूद पहाड़ों, नहरों, पेड़ों, खेतों, हवाओं, पानी, खुष्की, तरी, रात और दिन का आना, इन सब पर सोच विचार करेगा तो खुद से सवाल करेगा कि इन तमाम चीज़ों को किस ने पैदा किया है?

आसमान से पानी किसने बरसाया जिसके बिना मानव जीवन बाकी नहीं रह सकता,और उसमे पौधे, बाग, फूल और फल उगाए इन्सानों व जानवरों की ज़रूरत पूरी की और ज़मीन को इन चीज़ों की हिफ़ाजत के लिए तैयार किया

वह कौन हस्ती है जिसने ज़मीन पर मौजूद चीज़ों के हिसाब से कशिश यानी अपनी तरफ़ खींचने की मात्रा तै की है, न इसे ज़्यादा करता है कि ज़मीन पर हरकत करना कठिन हो जाए, और न ही इसमें कमी करता है कि जिससे इसमें मौजूद सभी चीज़ें उड़ जाएं। वह कौन हस्ती है जिसने इन्सान को अनोखे अन्दाज़ में पैदा किया है और उसे बहुत ही बेहतर शक्ल व रूप प्रदान किया है? यदि इन्सान अपनी ज़ात पर और अपने वजूद पर सोच विचार करेगा तो अल्लाह की अनोखी मख़लूक़ और पक्की बनावट

पर हैरत करेगा, आप अपने जिस्म के अलग अलग अंगों पर सोच विचार करें जो एक उचित अन्दाज़ में काम करते हैं आप उनमें से बहुत कम अंगों के कामों को जानते हैं न कि आप उसमें पूरी जानकारी रखते हों।

जिस हवा में आप सांस लेते हैं, उसी को देख लें कि यदि एक मिनट के लिए रुक जाए तो जीवन चक्र ठहर जाए। आप सोचें कि इसे किसने बनाया है? जिस पानी को आप पीते हैं, जो खाना आप खाते हैं, जमीन जिस पर आप चलते हैं, आसमान और उसमें मौजूद चीज़ें, सूरज जो रोशनी देता है और चांद सितारे, और जिन चीजों को आप अपनी आखों से देखते हैं सोच विचार करें कि इनको किसने पैदा किया है? वह अल्लाह की ज़ात है जिसने इस पूरे ब्रहमाण्ड को बनाया है, वही अकेला इस संसार को चलाता है, वही आपका दाता है जिसने आप को पैदा किया है, आपको रोज़ी देता है, आपको मारता और जिलाता है, उसी ने आपको अदम शून्य से वजूद प्रदान किया, जैसा कि उसने पूरी कायनात को प्रदान किया

इन तमाम सच्चाइओं के बाद भी कया एक अक़्लमन्द इन्सान सोच सकता है कि यह कायनात बेकार में बनाई गयी है, लोग आप से आप पैदा होते हैं एक लम्बे समय तक इस धरती पर ज़िन्दा रहते हैं और फिर मर जाते हैं इसी प्रकार हर चीज़ खत्म हो जाएगी

फिर सच्चाई क्या है और हमारे पैदा किए जाने का मक्सद क्या है?

पैदा किए जाने का मक़सद

अल्लाह ने हमें पैदा किया है ताकि हम केवल और केवल उसी की इबादत करें। उसने अपनी इबादत का तरीक़ा बताने के लिए हमारी तरफ़ बहुत से रसूलों (दूतों) को भेजा, और अनेक किताबें उतारी हैं अतः जो अल्लाह की इबादत करेगा और उसके आदेशों को मानेगा और उसके बताए हुए बुरे कामों से बचेगा वह अपने दाता की खुशनूदी को हासिल कर लेगा, परन्तु जो आदमी अल्लाह की इबादत से मुंह मोड़ेगा उसके बताए हुए अच्छे कामों व बुरे कामों से इन्कार करेगा, वह अल्लाह के प्रकोप और उसकी सज़ा का हक़दार ठहराया जाएगा, अल्लाह ने इस संसारिक जीवन को अमल का घर और इम्तिहान गाह बनाया है।

फ़िर क़यामत के दिन अल्लाह सारे इन्सानों को हिसाब व किताब के लिए दोबारा जिन्दा करेगा, जहां अल्लाह ने ऐसी जन्नत बना रखी है, जिसकी नेमतों को न तो किसी आंख ने देखा है, न किसी कान ने सुना है और न ही किसी इन्सान के दिल में उन नेमतों का विचार आया है, अल्लाह ने जन्नत को अपने उन मोमिन बन्दों के लिए तैयार किया है जो उस पर ईमान लाए होंगे और उसके आदेशों का पालन किये होंगे।

अल्लाह ने जहन्नम में अलग अलग तरह के अज़ाब तैयार किए हैं जिनके बारे में किसी इन्सान के दिल में विचार भी

नहीं आया होगा अल्लाह ने जहन्नम को उन लोगों के लिए तैयार किया है जिन्हों ने उसका और उसके आदेशों का इन्कार किया होगा और उसके अलावा किसी दूसरे की पूजा की होगी और इस्लाम को छोड़ कर किसी दूसरे धर्म को अपनाया होगा।

इस्लाम क्या है?

इस्लाम वह दीन है जिसे अल्लाह ने पसन्द किया है जो केवल एक अल्लाह की इबादत और उसके रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आज्ञा पालन व हुक्म मानने को कहता है। अल्लाह किसी भी व्यक्ति से इस्लाम के अलावा कोई दूसरा दीन नहीं कुबूल करेगा, यह कुछ लोगों के लिए ख़ास नहीं बल्कि पूरी मानवता के लिए है, अल्लाह ने अपने बन्दों को कुछ कामों के करने का हुक्म दिया है। अतः जो इन्सान अल्लाह का कहा मानेगा वह सफल होगा और जो उसका कहा नहीं मानेगा वह नाकाम व ना मुराद होगा। इस्लाम कोई नया दीन नहीं है, बल्कि अल्लाह ने इस धरती पर इन्सान के वजूद ही से इस दीन को अपने बन्दों के लिए पसन्द किया है, और तमाम रसूलों दूतों ने इसी दीन की तरफ दावत दी है।

इन्सानो की पैदाइश

इंसानों की पैदाइश की शुरूआत अबुल बशर आदम अलैहिस्सलाम से हुई है, अल्लाह ने उन्हें मिट्टी से पैदा किया, उनमें रूह फूंकी, उन्हें बहुत सारी चीज़ों के नाम

सिखाए और उनके आदर सम्मान में बढ़ौतरी की, फिर फ़रिशतों को आदेश दिया कि वे आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा करें अतः इब्लीस के अलावा सारे फ़रिश्तों ने सज्दा किया। इब्लीस ने सज्दा करने से इनकार कर दिया और आदम अलैहिस्सलाम से बैर करते हुए उसने घमंड का रास्ता अपनाया, अतएव अल्लाह ने उसे आसमान से उतार दिया और अपमानित करके जन्नत से निकाल दिया और उसके हक़ में फटकार, दुर्भाग्य और जहन्नम की आग लिख दी

तब इबलीस ने अल्लाह से मुहलत मागी कि वह आदम की सन्तान को गुमराह करेगा, और उनको सीधे रास्ते से फेर देगा। इसके बाद अल्लाह ने आदम अलैहिस्सलाम से उनकी बीवी हव्वा को पैदा किया ताकि वे उनसे सुख हासिल करें और उनको जानें पहचानें। अल्लाह ने इन दोनों को हुक्म दिया कि वे जन्नत में रहें जिसकी नेमतों के बारे में सोचना भी इन्सान के लिए बड़ा मुश्किल है। अल्लाह ने इन दोनों को इब्लीस की दुश्मनी से आगाह किया और आजमाइश व परीक्षा के तौर पर जन्नत के पेड़ों में से किसी पेड़ का फल खाने से मना कर दिया। लेकिन इब्लीस ने इन दोनों के दिलों में भ्रम पैदा किया और उस पेड़ का फल खाने पर उभारा और इसके लिए बहुत सारी क़समें खा कर उन को विष्वास दिलाया कि वह उनका भला चाहने वाला है इब्लीस ने कहा कि यदि तुम दोनों इस पेड़ का फल खा लोगे तो तुम सदैव जिन्दा रहोगे,

इब्लीस निरंतर आदम व हव्वा अलैहि के पीछे लगा रहा यहां तक कि इन दोनों को गुमराह कर दिया। दोनों ने उस पेड़ का फल खा लिया और अपने दाता की नाफ़रमानी कर दी। बाद में इन्हें अपने किए पर बहुत पछतावा हुआ और उन्होंने अपने दाता के दरबार में तौबा की तो अल्लाह ने इनकी तौबा स्वीकार कर ली लेकिन इन दोनों को जन्नत से जमीन पर उतार दिया। अल्लाह ने आदम व उनकी बीवी को ज़मीन पर बसाया और उन्हें ढेर सारी औलाद से नवाज़ा जो पूरी दुनिया में फैल गई। इब्लीस और उसके चेले आदम की औलाद के साथ बराबर टकराते रहे ताकि उनको हिदायत से बाज़ रख सके, भलाई से दूर रख सके, उनके सामने बुराइयों को सजा कर पेश कर सके और उन चीज़ों से दूर रख सके जो अल्लाह की रज़ामन्दी का ज़रिया बनती हैं ताकि वे आखिरत में जहन्नम में दाखिल हो सकें।

लेकिन अल्लाह ने अपने बन्दों को अकेला नहीं छोड़ा है, बल्कि उनकी तरफ बहुत से रसूलों को भेजा, जिन्होंने उनके सामने सत्य इस्लाम पेश किया और ऐसी बातों की तरफ ध्यान दिलाया जो उनके लिए नजात व कामयाबी का सबब हैं

जब आदम अलैहिस्सलाम की वफ़ात हो गयी तो उनके बाद उनकी सन्तान ने दस सदी तक अल्लाह की पैरवी की और एक अल्लाह को मानते हुए जीवन गुजारा। इसके

बाद उनमें शिर्क घुस आया, अल्लाह के साथ दूसरे की भी उपासना की जाने लगी, लोगों ने बुतों को पूजना शुरू कर दिया तो अल्लाह ने अपने पहले रसूल नूह अलैहिस्सलाम को भेजा जिन्हों ने लोगों को अल्लाह की इबादत करने और बुतों से अलग रहने की दावत दी।

नूह अलैहिस्सलाम के बाद नबियों के आने का सिलसिला शुरू हुआ। सारे ही नबियों ने इस्लाम यानी अल्लाह की इबादत करने और उसके अलावा पूजी जाने वाली दूसरी चीज़ों को छोड़ने का हुक्म दिया इसके बाद इबराहीम अलैहिस्सलाम आए। उन्हों ने भी अपनी क़ौम को बुतों की इबादत छोड़ने और केवल एक अल्लाह की इबादत करने की दावत दी। इनके बाद इनके बेटे इसमाइल और इसहाक़ अलैहिस्सलाम को नुबुवत मिली। इसके बाद इसहाक़ अलैहिस्सलाम की नस्ल में नुबुवत रही।

इसहाक़ अलैहिस्सलाम की नसल में जो नबी व रसूल हुए उनमें याकूब, यूसुफ, मूसा, दाऊद, सुलेमान, और ईसा अलैहिस्सलाम हैं। ईसा अलैहिस्सलाम के बाद इसहाक़ अलैहिस्सलाम की औलाद में कोई नबी नहीं हुआ है।

फिर नुबुवत का सिलसिला इसमाईल अलैहिस्सलाम की नसल में चला गया। अल्लाह ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आखिरी नबी और रसूल के तौर पर चुना। और आपकी लायी हुई शरीअत को आखिरी शरीअत और आप पर उतारी

गयी किताब कुरआन पाक को अल्लाह की ओर से भेजे जाने वाला आखिरी पैगाम बनाया।

यही वजह है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीयत मुकम्मल व हमागीरसर्व व्यापी है इन्सान व जिन्नात, अरब व ग़ैर अरब सभी के लिए आप हैं और हर दौर व स्थान, हर क़ौम व हालात के लिए मुनासिब व बेहतर हैं। अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भलाई की तमाम राहों को बता दिया है और बुराई की तमाम राहों से होशियार व ख़बरदार कर दिया है। अल्लाह तआला किसी से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाई हुई शरीयत के अलावा दूसरी शरीयत स्वीकार नंहीं करेगा।

नबी अकरम मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

अल्लाह ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अन्तिम रसूल बनाकर इस दुनिया में भेजा और आपकी रिसालत को आखिरी रिसालत बनाया। अल्लाह ने आप को दुनिया में भेजा ताकि आप लोगों को केवल एक अल्लाह की इबादत करने और उसके अलावा बुत आदि जिन चीज़ों की भी लोग उपासना करते हैं उनसे बाज़ रहने की तालीम दी। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चालीस साल की उम्र में नबी बनाया गया। सदाचार के मामले में नुबुवत मिलने से पहले ही आप न केवल अपनी क़ौम बल्कि सारे इन्सानों में सबसे प्रमुख व खास थे

अतएव आप सच्चाई व ईमानदारी और ऊंचे अख़लाक़ के मामले में इतने अधिक जाने जाते थे कि लोगों ने अमीन आपका लक़ब रख दिया था। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अनपढ़ थे आप पढ़ना और लिखना नहीं जानते थे अल्लाह ने आप पर कुरआन करीम जैसी किताब उतारी जिस के ताल्लुक से सारी मानव जाति को चुनौती दी कि इस जैसी कोइ किताब लाएं।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नसब नामा और आपके जीवन के हालात

आपका नाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम है। आप इसमाईल बिन इब्राहीम अलैहिमस्सलाम की नस्ल से हैं। आपकी मां आमिना बिन्त वहब बिन अब्दे मनाफ बिन ज़ोहरा हैं। ज़ोहरा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दादा के भाई हैं।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाप जनाब अब्दुल्लाह ने आमिना से शादी की और उनके साथ तीन ही दिन रहे। इन्हीं दिनों मां के पेट में आपका वजूद हुआ। आम औरतों को जिस तरह से हमल के भारी पन का एहसास होता है आमिनाको इसका एहसास नही हुआ

आप 571 ईसवीं में पैदा हुए आप बहुत ही ज़्यादा खूबसूरत और सेहतमन्द पैदा हुए थे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी मां के पेट में थे उसी समय आपके बाप का इन्तिकाल हो गया। इस वजह से आपके दादा

अब्दुल मुत्तलिब ने आपको पाला पोसा। तीन दिन तक आप की मां ने आप को दूध पिलाया फिर आपके दादा ने गावं की एक औरत हलीमा साअ्दिया को आप को दूध पिलाने के लिए तै कर दिया। अरबों में यह रिवाज था कि दूध पिलाने के मक़सद से अपने बच्चों को गांव देहात में भेज दिया करते थे ताकि उनकी अच्छे ढंग से परवरीश हो सके हलीमा साअ्दिया ने इस बच्चे का बड़ा अजीब असर देखा जिन में से एक घटना यह भी थी कि वे अपने पति के साथ एक दुबली पतली सुस्त रफतार गधी पर बैठ कर माक्का आयीं। वापसी के लिए जैसे ही वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी गोद में रखती हैं, गधी तेज़ गति के साथ दौड़ने लगती है और सारे जानवरों को पीछे छोड़ देती है जिसे देखकर रास्ते के साथी और मिलने वाले हैरत में पड़ जाते हैं।

इसी तरह दाई हलीमा बयान करती हैं कि उनकी छाती से बहुत ही कम दूध निकलता था जिसकी वजह से उनका बच्चा हमेशा भूख से रोया करता था लेकिन ज्यों ही उन्हों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दूध पिलाना शुरू किया, दूध का फुव्वारा बह पड़ा। इसी तरह से हलीमा क़बीला बनु साअ्द की ज़मीनों के बंजर व खुष्क होने के बारे में बातें करती हैं और कहती हैं कि जैसे ही उन्हें इस बच्चे को दूध पिलाने का गौरव प्राप्त हुआ बनु साअ्द की ज़मीन हरी भरी हो गयी और जानवर

बच्चे देने लगे। पहले की हालत एक दम बदल गयी और ग़रीबी व मोहताजी की जगह सम्पन्नता व मालदारी ने ले ली मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दो साल तक हलीमा साअ्दिया के लालन पालन में रहे। वे आपको और अपने यहां रखने की कोशिश में थीं क्यों की वे बहुत ही विचित्र चीज़ें और हालतें इस बच्चे के आस पास आते हुए देख रही थीं। दो साल पूरे होने पर हलीमा नबी अकरम को लेकर आपकी मां और दादा की सेवा में हाज़िर हुई

उन्हों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दूसरी बार अपने साथ ले जाने के लिए आमिना पर ज़ोर दिया अतएव आमिना ने उन्हें इसकी इजाजत दे दी। हलीमा यतीम बच्चे को अपने साथ लिए क़बीला बनु साअद पहुंचीं, वे बहुत खुश थीं और अपनी किसमत पर बड़ी खुशी से फूली नहीं समा रही थीं।

दो साल बाद हलीमा रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लिए आपकी मां की सेवा में आयीं, उस समय नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र चार साल थी। इसके बाद आपकी मां ने अपनी मौत तक आपको पाला पोसा। जिस समय मां की मौत हुई आपकी उम्र छ साल थी। मां के बाद दादा अब्दुल मुत्तलिब ने दो सालों तक आपका लालन पालन किया। इसके बाद वे भी इस दुनिया से चल बसे तो आपके चचा अबू तालिब ने आप के लालन पालन की जिम्मेदारी ले ली और अपनी

औलाद की तरह आपका ख्याल रखा लेकिन चूंकि वह खुशहाल नहीं थे अतः नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐश व आराम का जीवन गुजारने के आदी नहीं हुए।

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़बीला बनू साअ्द में थे तो आप अपने दूध शरीक भाइयों के साथ बकरियां चराने जाया करते थे अतएव आप मक्का की बकरियां चराने लगे और इससे आपको जो मज़दूरी मिलती उसे अपने चचा अबू तालिब को दे दिया करते थे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने चचा अबू तालिब के साथ तिजारती मकसद से शाम देश का सफर किया, उस समय आप 12 साल के थे। आपने दूसरी बार खदीजा बिन्त ख्वेलद के माल के साथ तिजारती सफर किया जो मक्का की सबसे मालदार औरत थीं। खदीजा ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दूसरे लोगों के मुक़ाबले ज्यादा मज़दूरी दी क्यों कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कई गुना लाभ हासिल हुआ था

शाम की तरफ़ सफर करने वाले एक तिजारती क़ाफिले में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने षिर्कत की थी जिस पर खदीजा रजियल्लाहु अन्हा का बहुत अधिक माल लगा हुआ था खदीजा बहुत अधिक धनी विधवा थीं। इस तिजारती क़ाफिले में खदीजा के माल का वकील और दूसरे मामलों का जिम्मेदार उनका सेवक मैसरा था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकत व

ईमानदारी की वजह से खदीजा की तिजारत में बहुत ही ज़्यादा लाभ हुआ । इस तरह का लाभ इससे पहले नहीं हुआ था। खदीजा ने अपने सेवक मैसरा से इतने सारे लाभ के बारे में पूछा तो उसने बताया कि सामान दिखाने और बेचने की ज़िम्मेदारी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सर ली थी जिसे देख कर बड़ी तादाद में लोग उनके पास आए तो इस प्रकार जुल्म के बिना बहुत ज़्यादा नफा हासिल हुआ।

खदीजा ने अपने सेवक मैसरा की बातों को बड़े ध्यान से सुना। वे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के बारे में पहले से कुछ जानती भीं थी लेकिन यह घटना सुनकर उनकी हैरानी बहुत बढ़ गयी और इसी समय उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शादी करने की बात का जिक्र किया। उन्होंने अपने क़रीबी रिष्तेदार को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में भेजा ताकि इस मामले में आपकी राय से उनको आगाह करे। उस समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 25 साल थी अतएव वह औरत आप की सेवा में हाजिर हुई और उसने खदीजा की तरफ से शादी का पैगाम रखा जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वीकार कर लिया । इस तरह से यह शादी हो गयी और इनमें का हरेक एक दूसरे को पाकर बहुत खुश हुआ।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खदीजा की दौलत की देख भाल की ज़िम्मेदारी संभाल ली। आपने इस मैदान में अपनी योग्यता व सूझ बूझ साबित कर दी। इस तरह से कई साल गुजर गए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से खदीजा की कई सन्तान हुई। लड़कियों में ज़ैनब, रुक़य्या, उम्मे कुलसूम और फ़ातिमा रजियल्लाहु अन्हा थीं और लड़कों में क़ासिम और अब्दुल्लाह थे जो कम उम्र ही में वफात पा गए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जैसे ही चालीस साल की उम्र के क़रीब हुए, आप मक्का के मश्रिक़ में स्थित पहाड़ की हिरा नामी एक गुफा में एकेले रहने लगे। आप कई कई दिन और रातें इसी गुफा में गुजारते और अल्लाह की इबादत करते। इक्कीसवीं रमजान को आप गुफा ही में थे जबकि आपकी उम्र चालीस साल थी आपकी सेवा में जिबरईल अलैहिस्सलाम हाज़िर हुए और आप से कहा .....पढ़िए..... आप ने कहा .....मैं पढ़ना नहीं जानता। जिबरईल अलैहिस्सलाम ने यही बात दूसरी और तीसरी बार कही। तीसरी बार उन्हों ने कहा .....

इक़रा बिस्मी रब्बिकल्लज़ी खलक.खलकल इन्सान मिन अलक. इक़रा व रब्बुकल अकरमुल्लज़ी अल्लम बिल कलम अल्लमल इन्सान मालम यालम। सूरह अल अलक़, आयत 1से5

वहां से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर वापस आए इस घटना से आप कांप रहे थे। आपने कहा मुझे

चादर उढ़ा दो, मुझे चादर उढ़ा दो ख़दीजा ने आप पर चादर डाल दी, कुछ देर बाद आपके दिल का डर दूर हो गया, आपने ख़दीजा से पूरी घटना बयान की और कहा मुझे अपनी जान के बारे में खतरा पैदा होने लगा था। ख़दीजा रजियल्लाहु अन्हा ने कहा कदापि नहीं, अल्लाह आपको कभी रुसवा नहीं कर सकता आप रिष्तेदारों को जोड़ते हैं लाचारों के काम आते हैं, ग़रीबों की सेवा करते रहते हैं मेहमानों की आव भगत करते हैं और मुसीबतों में लोगों के काम आते हैं।

कुछ मुद्दत के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिरा नामक गुफा में पहुंचे ताकि अपनी इबादत में फिर से लग जाएं। जब आप इबादत करने के बाद मक्का वापस होने के इरादे से गुफा से निकले। जब बीच वादी में पहुंचे तो आप को जिब्रईल अलैहिस्सलाम दिखाई दिए। वे आसमान व ज़मीन के बीच कुर्सी पर बैठे हुए थे। इस अवसर पर उन्हों ने आप तक यह वह्य पहुंचाई

या अय्युहल मुद्दस्सिर., कुम फ़अन्जिर, व रब्बक फ़ कब्बिर., व सियाबक फतह्हिर., वर्रुजज़ाफ़हजुर., सूरह अल मुदद्स्सिर, आयत 1 से 5

इसके बाद आप पर वह्य बराबर उतरती रही।

अल्लाह ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुकम दिया वे लोगों को केवल अल्लाह की इबादत करने और इस दीन इस्लाम को अपनाने की दावत दें जिसे

अल्लाह ने उनके लिए पसन्द किया है। अतएव जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिम्मत व सूझ बूझ और बेहतर उपदेष व नसीहत के साथ दावत का काम अंजाम देने लगे तो आपकी दावत सबसे पहले जिन लोगों ने स्वीकार की उन में औरतों में आपकी पत्नी ख़दीजा,रजियल्लाहु अन्हा मर्दों में आपके दोस्त अबू बक्र रज़ि0, बच्चों में आपके चचाज़ाद भाई अली रज़ि0 थे। इसके बाद लोग अल्लाह के दीन में अधिक संख्या में दाखिल होने लगे। इसकी वजह से रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मुश्रिकों की ओर से यातना देने व सताने का सिलसिला बढ़ गया मक्का में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लोगों को तेरह साल तक दावत देते रहे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा किराम रजियल्लाहु अन्हु पर काफ़िरो के जुल्म व अत्याचार का सिललिसा बढ़ता चला गया जिसकी वजह से रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा किराम रजियल्लाहु अन्हुम हिजरत करके मदीना चले गये और वहां अपनी दावत का काम शुरू कर दिया। फिर कुछ सालों के बाद मक्का वापस आए और उस समय तमाम वासी दीन इस्लाम में दाखिल हो गए।

इसके बाद अल्लाह ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को वफ़ात दे दी। उस समय आपकी उम्र 63 साल थी। चालीस साल नुबुवत से पहले और 23 साल नुबुवत के बाद

अल्लाह ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही पर आसमानी पैग़ामात का सिलसिला खत्म कर दिया और उस ने आपकी पैरवी व फरमां बरदारी को सारे इन्सानों पर अनिवार्य क़रार दिया। जो आपकी पैरवी करेगा वह दुनिया में भाग्यशाली होगा और आखिरत में जन्नत में दाखिल होगा और जो आपकी नाफरमानी करेगा, वह दुनिया में बदबख्त होगा और आखिरत में जहन्नम में दाखिल होगा। जब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई तो सहाबा किराम ने आपकी दावती सफ़र को क़ायम व जारी रखा, आपकी दावत को दूसरों तक पहुंचाया और दुनिया में इस्लाम को फैलाया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेहतर अख़लाक़

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बड़े अच्छे व बेहतर अख़लाक़ के मालिक थे। नुबुवत से पहले ही अपने बेहतर अखलाक़ की वजह से जाने जाते थे। नुबुवत के बाद भी आपके अखलाक़ की बेहतरी में इज़ाफ़ा हुआ। अल्लाह ने आपको यह कहते हुए मुखातब किया, **इन्नक लअला खुलुकिन अज़ीम** अर्थात आप अखलाक़ के ऊंचे दर्जों पर हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अच्छे अखलाक़ की दावत दिया करते थे और उनको उभारने पर जोर दिया करते थे,

रसूलुल्ला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिन बेहतर और अच्छी आदतों की दावत दी उनका नमूना सहाबा किराम के सामने पेश किया। आपने हिम्मत व नसीहत की बातों के ज़रीया सहाबा के अन्दर अच्छे अखलाक़ की खेती करने से पहले अपने पाक जीवन के ज़रीया उनके अन्दर बेहतर अखलाक़ की शुरुआत की

हज़रत अनस रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैंने दस सालों तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा की। अल्लाह की क़सम आपने कभी भी मुझे उफ़ तक नहीं कहा और न ही किसी चीज़ के बारे में पूछा कि तुमने यह काम क्यों किया, ऐसा क्यों नहीं करते? हज़रत अनस रज़ि0 बयान करते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ चल रहा था। आपके जिस्म पर मोटे कपड़े की एक चादर पड़ी हुई थी, एक बदवी ने चादर पकड़ी और ज़ोर से खींचा, मैंने देखा कि ज़ोर से चादर खींचने की वजह से चादर की धारी का निशान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गर्दन पर पड़ गया था, इसके बाद बदवी ने कहा ऐ मुहम्मद! आपके पास जो माल है उसमें से मुझे भी देने का हुक्म दीजिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसकी तरफ़ मुड़े और हंस पड़े, फ़िर उसे कुछ अतिय्या देने का हुक्म दिया।

उम्मुल मोमिनीन आइशा रज़ि0 से पूछा गया कि अल्लाह के रसूल घर में क्या करते थे? उन्होंने बयान किया आप

अपने घर वालों की सेवा में व्यस्त रहा करते थे। जब नमाज़ का समय होता तो वुज़ू करते और नमाज़ के लिए निकल जाया करते थे।

अब्दुल्लाह बिन हारिस रजियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैंने रसूलुल्ला सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ज़्यादा किसी को मुस्कुराते हुए नहीं देखा। हज़रत जाबिर रज़ि0 बयान करते हैं कि ऐसा नहीं हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किसी चीज़ का सवाल किया गया हो और आपने मना कर दिया हो।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खूबियों के ताल्लुक से मशहूर है कि आप बहुत बड़े दानी थे किसी भी चीज़ में कन्जूसी नहीं करते थे। बहुत बड़े साहसी व बहादुर थे। सत्य वचन से कभी मुंह नहीं मोड़ते थे, न्याय करने वाले थे, किसी भी फ़ैसले में जुल्म व अन्याय नहीं किया करते थे आप का पूरा जीवन ईमानदारी और सच्चाई में बीता था।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा किराम रज़ि0 से हंसी मज़ाक किया करते थे उनके साथ उठते बैठते थे, उनके बच्चों के साथ दिल लगी किया करते थे और उन्हें अपनी गोद में बिठाया करते थे, दावत को स्वीकार करते, रेगियों की बीमारी में हाल चाल पूछा करते थे और मजबूर लोगों की मजबूरी सुनकर स्वीकार किया करते थे। आप सहाबा किराम रज़ि0 को उनके बेहतर और

अच्छे नामों से बुलाया करते थे और आप किसी की बात काटा नहीं करते थे।

अबू क़तादा रज़ि0 बयान करते हैं जब नज्जाशी का वफ़्द आया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनकी सेवा के लिए उठे तो सहाबा किराम रज़ि0 ने कहा हम काफ़ी हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उन्होंने हमारे साथियों के साथ बेहतर सुलूक किया है अतएव मैं चाहता हूं कि उनका बदला उतार दूं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहा करते थे मैं दूसरे इन्सानों की तरह खाता हूं, दूसरों की तरह बैठता हूं। आप गधी पर सवारी करते थे, बीमारों की बीमार पुरसी करते थे और फ़कीरों का साथ दिया करते थे।

प्रसिद्ध नोबिल इनाम पाने वाला अंग्रेज़ फ़लसफ़ी थामस कारलयल अपनी किताब में लिखता है इस ज़माने में किसी भी इन्सान के लिए सबसे बड़ी शर्म की बात यह हो गयी है कि उन लोगों की बातों पर कान धरा जाए जो कहते हैं कि दीन इस्लाम झूठा है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम धोके बाज़ और फ़रेबी हैं।

प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक बरनाडषा अपनी मशहूर किताब ,मुहम्मद, जिसे अंग्रेज़ सरकार ने जला डाला था, में लिखता है आज दुनिया को मुहम्मद फिक्र वाले इन्सान की ज़रूरत है जिन्होंने अपने दीन को सदैव दूसरों की निगाह में सम्मान योग्य बना कर रखा। यह दीन सारी तहजीब

को हज़म करने की सबसे ज़्यादा योग्यता रखता है, यह सदैव ही बाकी रहने वाला दीन है, मैंने अपनी क़ौम के बहुत से लोगों को देखा कि वे दलीलों के आधार पर इस दीन में दाखिल हुए और जल्द ही यह दीन यूरोप में बड़े पैमाने पर जगह पाएगा,

उसने आगे कहा बीच के दौर में बहुत सी दीनी हस्तियों ने जिहालत और पक्षपात की वजह से दीने मुहम्मदी की गलत तस्वीर पेश की। वे इस दीन को मसीही दीन का विरोधी समझते थे लेकिन मैंने उस व्यक्ति के बारे में जानकारी हासिल की तो बड़ी ही अजीब चीज़ें मालूम हुई। मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि यह व्यक्ति मसाइल व परेशानियों को ऐसे उसूलों के ज़रिया हल करने में कामयाब है जो सौभाग्य व सलामती के ज़मानती हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मोज़िजों का बयान

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सबसे बड़ा मोजिज़ा कुरआन मजीद है जिसने तमाम अरब की अरबी भाषा के माहिरों को विवश कर दिया। अल्लाह ने संसार के सारे इन्सानों को चुनौती दी कि कुरआन पाक की किसी सूरह के जैसी कोई सूरह लाकर पेश करें और काफ़िरो ने भी इस कुरआन के मोजिज़े की बात मानी और यह चुनौती आज भी क़ायम है।

मक्का के काफ़िरों ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चांद के दो टुकड़े करने की चुनौती दी।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह से दुआ की तो अल्लाह ने चांद के दो टुकड़े कर दिये, इसके बाद वह अपनी असली हालत पर लौट आया। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उंगलियों से पानी के उबलने की घटना कई बार पेश आयी और आपकी हथेली में कंकर ने तसबीह पढ़ी।

जहरीली बकरी जिसे एक यहूदिया ने आपको हदया क्या था कि वह इसके ज़हर से आपको मार डाले, उसने आप से बात की। एक बदवी ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मांग की कि आप कोई निषानी दिखएं। आपने एक पेड़ को हुक्म दिया तो वह आपके पास आ गया फिर आपने हुक्म दिया तो वह अपनी जगह वापस लौट गया। आपने बकरी के थन पर हाथ फेरा, जिसमें बिल्कुल दूध नहीं था तो उसमें दूध जमा हो गया, अतएव आपने उसे दूहा, स्वयं पिया और अपने दोस्त अबू बक्र को भी पिलाया।

अली रजियल्लाहु अन्हु की आंखे आयी हुई थीं आपने उनमें थूक लगा दिया, जिससे वे उसी समय ठीक हो गयीं। किसी सहाबी का पांव घायल हो गया, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस पर हाथ फेरा, वह उसी समय ठीक हो गया।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अनस बिन मालिक के लिए लम्बी उम्र, माल की अधिकता और

औलाद की कसरत की दुआ की और उनके हक़ में बरकत की भी दुआ की, जिसका असर यह हुआ कि उनकी एक सौ बीस सन्तान हुई और उनके खजूर के पेड़ पर साल में दो बार फल लगता था जबकि खजूर का मामूल यही है कि उन पर साल भर में एक बार फल लगता है और उन्हों ने एक सौ बीस साल की उम्र पायी।

आप मिम्बर पर थे कि किसी सहाबी ने अकाल की शिकायत की, आपने अल्लाह से दुआ के लिए अपने दोनों हाथों को उठाया, उस समय आसमान पर बादल के नाम व निशान भी नहीं थे। उसी समय पहाड़ की तरह बादल छा गऐ और दुसरे जुमा तक बारिश हुई यहां तक कि लोगों ने ज़्यादा बारिश होने की शिकायत की। अतः आपने अल्लाह से दुआ की तो बारिश रुक गई और लोग निकले तो देखा कि धूप निकली हुई है।

आपने एक साअ (नापने का पैमाना) जौ और एक बकरी से, ख़न्दक़ पर काम करने वाले एक हज़ार सहाबा को खाना खिलाया, यहां तक कि उनके पेट भर गए और खाना थोड़ा भी कम नहीं हुआ, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन सौ काफ़िरो के सामने से निकल गए जो मक्का में आपके घर के चारों ओर आपको कत्ल करने के मक़सद से जमा हुये थे आपने उनके चेहरों पर मिट्टी फ़ैंक दी और उनके सामने से निकल गए, उन्हों ने आपको देखा तक नहीं।

सुराक़ा बिन मालिक ने क़त्ल करने के इरादे से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पीछा किया लेकिन ज्यों ही आपके क़रीब पहुंचा तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके लिए बद् दुआ की, जिससे उसके घोड़े के पांव ज़मीन में धंस गए।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के असंख्य मोजिज़े हैं। सारे मोजिज़े आपकी रिसालत की सच्चाई को साबित करने के लिए अल्लाह की ओर से भेजे हुए हैं।

ईमान के अरकान

1.**अल्लाह पर ईमान** यह ईमान की असल बुनियाद है अल्लाह पर ईमान का मतलब अल्लाह के वजूद पर पक्का यक़ीन रखना है और यह कि वही हर चीज़ का पालनहार और मालिक है। वही अकेला पैदा करने वाला है वही अकेला इबादत का हक़दार है। उसका कोई साझी नहीं है वह अपनी तमाम सिफ़ात में मुकम्मल है वह हर प्रकार के ऐब, कमियों और मख़लूक की समानता से पाक है।

जो दुनिया में मौजूद मख़लूक़ पर नज़र डालेगा तो वह पाएगा कि ये सारी मख़लूक़ आप से आप पैदा नहीं हुई हैं और ऐसा भी नहीं हो सकता कि बिना किसी पैदा करने वाले के एलावा हि वजूद में आ गयी हों बल्कि इन सारी चीज़ों का पैदा करने वाला अल्लाह है।

2.**फ़रिष्तों पर ईमान** . फ़रिष्ते परोक्ष की दुनिया की मख़लूक़ है। वे अल्लाह की इबादत किया करते हैं। इनको

खुदाई या हुकूमत की विषेशता हासिल नहीं है। अल्लाह ने इनको अपने आदेषों का पाबन्द बनाया है और उनको लागू करने की ताक़त प्रदान की है।

एक मुसलमान फ़रिष्तों के वजूद पर ईमान रखता है और यह भी मानता है कि उनकी संख्या बहुत ज़्यादा है जिसका सही अन्दाज़ा अल्लाह ही को है। इसी प्रकार अल्लाह ने जिन फ़रिषतों के नाम बताए हैं उन पर ईमान रखते हैं जैसे जिब्रईल, मालिक और मीकाईल आदि। इसी तरह से हमें जिन फ़रिष्तों की सिफ़ात और उनके काम बताए गए हैं हम उन पर भी ईमान रखते हैं।

3. **आसमानी किताबों पर ईमान** मुसलमान इस बात पर यक़ीन रखता है कि अल्लाह ने हक़ का परिचय और उसकी ओर दावत की मनषा से कुछ अम्बिया किराम और रसूलों पर आसमानी किताबें भेजीं जैसा कि मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरात उतारी, ईसा अलैहिस्सलाम पर इंजील, दाऊद अलैहिस्सलाम पर जुबूर। इसी प्रकार एक मुसलमान इस बात पर भी ईमान रखता है कि कुरआन करीम को अल्लाह ने सब से अन्त में आख़िरी नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारा

कुरआन मजीद इन्सानियत के लिए अल्लाह का यह आख़िरी पैग़ाम है। अल्लाह किसी इन्सान से उस समय तक किसी अमल को स्वीकार नहीं करेगा जब तक उस का अमल कुरआन के अनुसार न हो। पूर्व आसमानी

किताबों के लिए फ़ैसला और उनकी तसदीक़ करने वाली है। इस किताब की प्रमुख खूबी यह है कि अल्लाह ने इस की हिफ़ाजत की जिम्मेदारी अपने पास ले रखी है अतएव न तो इस में किसी भी तरह से तब्दीली संभव है और न ही हेर फेर, जबकि पूर्व आसमानी किताबें हेर फेर और तब्दीली का शिकार हो गयीं क्यों कि अल्लाह ने कुरआन मजीद की तरह से और किताबों की हिफ़ाजत की जिम्मेदारी अपने सर नहीं ले रखी थी।

कुरआन मजीद में अदबी शैली देखें तो इसमें बलाग़त का बड़ा ऊंचा नमूना मौजूद है और कानून साज़ी की निगाह से देखें तो बड़ा ही बा कमाल क़ानून है। इस में ग़ैब के ऐसे किस्से और घटनाएं बयान कीए गये हैं जिन्हें कोई इन्सान न तो जानता है और न ही स्वयं इन्सानी दिमाग़ उन तक पहुंच ही सकते हैं। फितरी तौर पर देखें तो कुरआन मजीद ऐसे क़ानून व घटनाओं की ओर इशारा करता है जिन की जानकारी न तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में और न ही आपके बाद क़रीब के ज़माने में और न ही आपके आने वाले दसयों ज़माने के लोगों को थी। इसमें कुछ ऐसे क़ानून भी हैं जिनका पता व जानकारी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जमाने के तेरह सौ साल बाद हो सका है और कुछ ऐसे भी कानून हैं जिनका अभी पता ही नहीं हो सका है।

कुरआन मजीद एक ऐसी किताब है जिसके जरिया अल्लाह ने सारे इन्सानों को चुनौती दी है कि वे इस कुरआन की सूरतों की तरह से दस सूरतें लाएं या कोई एक सूरत ही बना लाएं,पर लोग ऐसा करने से वे विवष रहे वैसे यह मोजिज़ा आज भी बरक़रार है, कुरआन का मोजिज़ा आज भी अपनी जगह एक अटल हकीक़त है। कमाल केवल कुरआन के शब्दों ही में नहीं है और न ही केवल गैब की घटनाओं में और न ही केवल तशरीई आयतों में बल्कि कुरआन पूरा का पूरा मोजिज़ा है।

4. **रसूलों पर ईमान** मुसलमान इस बात पर ईमान रखता है कि अल्लाह ने रसूलों को केवल एक अल्लाह की इबादत करने और उसके खिलाफ़ अन्य तमाम चीज़ों को छोड़ने की दावत देने के लिए भेजा है। रसूल सब इन्सान और मख़लूक़ थे उन्हें खुदाई या हाकिमियत में से कोई खासियत हासिल नहीं थी। उन्हें दूसरे इन्सानों की तरह से खाने पीने, बीमारी और मौत जैसी ज़रूरतें पेश आती थीं। रसूल सबसे बेहतर इन्सान हैं अल्लाह ने रिसालत के लिए उन्हें चुन लिया है और पसन्द कर लिया है।

इसी तरह रसूलों पर ईमान में यह भी शामिल है कि हम इस बात को मानें कि उनकी रिसालत बरहक़ है और अल्लाह ने रसूलों में से जिनके नामों को बताया है हम उन नामों के साथ उन पर ईमान रखते हैं और उनके ताल्लुक़ से जो घटनाएं साबित हैं उन्हें भी मानते हैं अब

इस शरीअत के अनुसार अमल करते हैं इस वजह से कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत के बाद अल्लाह तआला दूसरी शरीअत को स्वीकार नहीं करेगा।

5. **आख़िरत पर ईमान** इससे मुराद क़ियामत का दिन है जिस दिन अल्लाह हिसाब किताब के लिए सारे इन्सानों को दोबारा जिन्दा करेगा। इसे अल यवमुल आख़िर कहने का सबब यह है कि उसके बाद कोई दिन नहीं होगा। जन्नती लोग अपने ठिकानों में और जहन्नमी अपने ठिकानों में सदैव के लिए चले जाएंगे।

आख़िरत के दिन पर ईमान रखने का मतलब यह है कि इसके क़ायम होने में पक्का यक़ीन रखा जाए और उसके अनुसार अमल भी किया जाए। आख़िरत के दिन पर ईमान लाने में तीन चीज़ें शामिल हैं।

अः दोबारा ज़िन्दा किए जाने पर ईमान रखना, इस का मामला यह होगा कि अल्लाह लोगों को दोबारा ज़िन्दा करेगा तो वे अपनी क़ब्रों से नंगे पांव, नंगे बदन और बिना खतना की हालत के उठ खड़े होंगे।

बः हिसाब किताब पर ईमान रखना अल्लाह हर इन्सान के सांसारिक कर्मों का हिसाब लेगा और उसका बदला देगा जिसने अल्लाह की पैरवी की होगी, अल्लाह पर ईमान लाया होगा और सत्कर्म किए होंगे तो उसे जन्नत मिलेगी, अलबत्ता जिसने नाफ़रमानी की होगी और इन्कार किया होगा उसे जहन्नम में डाला जाएगा।

हिसाब किताब हिक्मत के ठीक अनुसार होगा। अल्लाह ने बहुत सी किताबों को उतारा, बहुत से रसूलों को दुनिया में भेजा और लोगों के सामने भलाई व बुराई को बयान कर दिया और लोगों पर अपनी इबादत व पैरवी को आनिवार्य ठहरा दिया।

इसके बावजूद भी इन्सानों में से कुछ लोग मोमिन हैं कुछ काफ़िर, अतएव सभी लोगों के साथ एक जैसा सुलूक हो यह हिक्मत व न्याय व अल्लाह के हिसाब से उचित नहीं है अल्लाह तआला कुरआन में इर्शाद फ़रमाता है क्या हम मुसलमानों को मुजरिमों की तरह से बना देंगे, तुम्हें क्या हो गया है, तुम लोग कैसे फैसले कर रहे हो?

सः जन्नत व जहन्नम पर यक़ीन रखना . यही सारी मखलूक का असल ठिकाना है। जन्नत नेमतों से भरा पुरा घर है जिसे अल्लाह ने मोमिनों, सदाचारियों और भले लोगों के लिए तैयार कर रखा है जो अल्लाह के हुक्म के अनुसार ईमान लाए। अल्लाह और उसके रसूल की पैरवी व फ़रमांबरदारी की, अल्लाह के लिए नेक नीयती अपनायी और रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आज्ञा पालन किया। लोग अपने कर्मों के हिसाब से जन्नत में भी अलग अलग दर्जों में होंगे।

जहन्नम यातना व अजाब की जगह है, इसे अल्लाह ने जालिमों, सरकशों और इन्कार करने वालों के लिए तैयार

कर रखा है जिन्होंने अल्लाह के साथ कुफ्र किया और उसके रसूल की नाफ़रमानी की।

6. **तक़दीर पर ईमान लाना,** इन्सान यह ईमान रखे कि वे सभी चीज़ें अल्लाह के इल्म में हैं जो हो रही हैं या जो हो चुकी हैं या जो आगे होंगी। और यह ईमान रखे कि अल्लाह ने जो चाहा वही हुआ और जो नहीं चाहेगा वह नहीं होगा। दुनिया में जो चीज़ें भी वजूद में आती हैं वे अल्लाह के इल्म में होती हैं और उसी की मर्जी से अंजाम पाती हैं।

इस्लाम में इबादत की हक़ीक़त

इस्लाम में इबादत उसी सूरत में स्वीकार योग्य होती है जबकि वह पूरी तरह नेक नीयती से अल्लाह के लिए हो और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बताए हुए तरीक़े के अनुसार हो। मिसाल के तौर पर नमाज़ एक ऐसी इबादत है जिसे अल्लाह के सिवा किसी दूसरे के लिए अंजाम नहीं दिया जा सकता और उसे उसी तरह अदा क्या जाए जैसे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बयान किया है। इसके कुछ असबाब हैं

अ: अल्लाह ने खास अपनी ही इबादत का हुक्म दिया है अतएव उसके सिवा किसी दूसरे की इबादत शिर्क होगा अल्लाह ने इर्शाद फ़रमाया अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी दूसरे को साझी न ठहराओ, (सूरह अन निसा, आयत 36)

बः अल्लाह ने क़ानून बनाने का हक़ अपने साथ ख़ास किया है अतएव यह केवल उसी का हक़ है। अब यदि कोई अल्लाह के निर्धारित क़ानून के अलावा और क़ानून पर अमल करता है तो मानो वह इन्सान अल्लाह के उस हक़ में दूसरे को शरीक करता है।

सः अल्लाह ने हमारे लिए अपने दीन को मुकम्मल कर दिया है। अब यदि कोई व्यक्ति अपने पास से कोई नयी इबादत ईजाद करता है तो मानो वह दीन के अधूरा होने की बात करता है।

हः यदि लोगों को इस बात की इजाज़त होती कि वे जिसकी चाहें जैसे चाहें इबादत करें तो इबादत के बारे में हर इन्सान का अपना एक खास तरीका होता क्योंकि लोगों की पसन्द व शौक़ अलग अलग होता है।

इस्लाम के अर्कान

इस्लाम के पांच अर्कान हैं,

1. अल्लाह के एक होने और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत की गवाही देना।
2. नमाज़ काएम करना,
3. ज़कात अदा करना,
4. रमज़ान के रोज़े रखना,
5. ख़ानए काबा का हज करना,

इस्लाम के अर्कान का मतलब

1. कलिमएशहादत अर्थात लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदु र्रसूलुल्लाह का मतलब यह है कि पक्का यक़ीन हो और जुबान से इसको अदा भी किया हो कि केवल अल्लाह उपास्य बरहक़ है और उसका कोई शरीक नहीं है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल और उसके दूत हैं।

किसी भी इन्सान का इस्लाम, अल्लाह के लिए नेकनीयत और रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैरवी के बिना स्वीकार नहीं होगा।

लाइलाह इल्लल्लाह का मतलब यह है कि इन्सान इसको, इस बात का यकीन करते हुए कहे कि अल्लाह तआला ही अकेला माबुदे बरहक है सिर्फ जुबान से अदा कर देना ही काफी नहीं है बल्कि उसके अनुसार अमल करना अल्लाह के आदशों की पूरी पाबन्दी करना भी ज़रूरी है।

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह, का मतलब यह है कि आप ने जिन चीज़ों का हुक्म दिया है उनमें आप का आज्ञा पालन किया जाए। जिन चीज़ों से रोका है उन से बाज रहा जाए और अल्लाह की इबादत के जो तरीके बताए हैं उन्हीं के अनुसार अल्लाह की इबादत की जाए।

2. नमाज़ क़ायम करना, इस्लाम में रात व दिन में फ़र्ज नमाजों की संख्या पांच है। ये फ़ज्र, जोहर, अस्र, मग़रिब और इशा की नमाज़े हैं।

3. ज़कात अदा करना हक़दार लोगों व मिसकीन को माल में से मुक़र्रर रक़म अदा करना

ज़कात अदा करने के लाभ, कंजूसी से नफ़्स की सफ़ाई, मोहताज मुसलमानों की जरूरत पूरी होना, मुसलमानों के बीच प्यार को बढ़ावा देना, स्वार्थ से बचना, आपसी बैर व हसद से बचाव, मेहरबानी व देखभाल के मक़सद से दूसरो की चिंता आदि भली बातों को हासिल करना।

4. रमज़ान के रोज़े रखना, रमज़ान के दिनों में रोज़ा तोड़ने वाली चीज़ों से रुके रह कर अल्लाह की इबादत करना। अर्थात रमज़ान के पूरे महीने में एक मुसलमान खाना, पीना, संभोग और इस तरह के दूसरे कामों को अल्लाह की इबादत की वजह से फ़ज्र के उदय से सूरज के डूबने तक छोड़े रखे।

रोज़े के लाभ, नफ़्स की सफ़ाई, अल्लाह की रज़ा को पाने के लिए नफ़्स की पसन्दीदा चीज़ों का छोड़ने का आदी बनाना, और सब्र व मुश्किल हालात को सहन करने का उसे आदी बनाना। उसके लाभों में अल्लाह के लिए नेक नीयती की भावना को बढ़ावा देना, अमानत की देखभाल करना और दूसरों के दुख दर्द को महसूस करना और बदन की सामान्य सेहत का हासिल करना भी है ।

5. खाना काबा का हज करना . यदि गुनजाइश हो तो इबादत के मकसद से हज के तमाम अर्कान की पाबन्दी व

उन को पूरा करने के लिए मक्का में मौजूद खाना काबा का उम्र में एक बार इरादा करना।

इस्लाम की खासियतें

इस्लाम ही वह दीन है जिसे सारे लोगों के लिए अल्लाह ने पसन्द किया है। यह दीन हर युग व स्थान के लिए मुनासिब है। इस दीन ने भलाई की सारी राहों को बयान कर दिया है और बुराइयों की तमाम राहों से हमें डरा दिया है। इन्सानों को मज़हबे इस्लाम अपनाए बिना और जीवन के अलग अलग स्थलों में इसे लागू किए बिना सुख शान्ती नहीं है। दीने इस्लाम की महानता का अन्दाज़ा इन खासियतों से भी होता है जो केवल इस्लाम में ही पायी जाती हैं

वे खासियतें जिनकी बुनियाद पर मजहब इस्लाम ऊंचा स्थान प्राप्त करता है और मानवता के लिए अनिवार्य ठहराता है वे इस तरह हैं

1. यह खुदाई मज़हब है और अल्लाह ही जानता है कि बन्दों के लिए सही मज़हब कौन सा है। अल्लाह इर्शाद फ़रमाता है

क्या वही न जाने जिसने पैदा किया? फिर वह बारीक बीं और खबर रखने वाला भी हो।

2. मज़हब इस्लाम ही वह मज़हब है जो मानवता की शुरूआत और चरम सीमा और इन्सान की पैदाइश का मक्सद बयान करता है और उन रास्तों को बयान करता है

जिन पर इस दुनिया में उसका चलना ज़रूरी है और उन चीज़ों को भी बताता है जिन से बचना ज़रूरी है।

अल्लाह कुरआन पाक में इर्शाद फरमाता है, ऐलोगों अपने पालनहार से डरो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी से उसकी बीबी को पैदा करके उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें फैला दीं।एक दूसरी जगह फ़रमाता है

इसी ज़मीन से हमने तुमको पैदा किया और इसी में फिर लौटाएंगे और इसी से फिर दोबारा तुम सबको निकाल खड़ा करेंगे। और फ़रमाया

मैंने इन्सानों को और जिन्नात को केवल और केवल अपनी इबादत के लिए पैदा किया है। (सूरह अल जारियात, आयत, 56) और आगे फ़रमाया

आज मैंने तुम्हारे लिए दीन को मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपना इनाम भरपूर कर दिया और तुम्हारे लिए इस्लाम के दीन होने पर राज़ी हो गया, सूरह अल माइदा, आयत 3

3. यही दीने फ़ितरत है दीन इस्लाम फितरत के खिलाफ़ नहीं है अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है

अल्लाह की वह फ़ितरत है जिस पर उसने लोगों को पैदा किया है। सूरह अर रूम, आयत, 30

4. इस्लाम मज़हब अक़्ल को महत्व देता है और सोच विचार करने का हुक्म देता है। वह जिहालत, अन्धी

तक़लीद और सही सोच विचार से मुंह मोड़ने की निंदा करता। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाता है, बताओ तो इल्म वाले और बे इल्म वाले क्या बराबर हैं? निष्चय ही नसीहत वही हासिल करते हैं जो अक़्ल वाले हों। (सूरह अज़ ज़ुमर,) आयत, 9 एक जगह अल्लाह फ़रमाता है आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में और रात दिन के हेर फेर में निष्चय ही अक़्लमन्दों के लिए निशानियां हैं जो अल्लाह का ज़िक्र खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर लेटे हुए करते हैं और आसमानों व ज़मीन की पैदाइश में सोच विचार करते हैं और कहते हैं ऐ हमारे पालनहार! तूने इनको बे फायदा नहीं बनाया, तू पाक है अतः हमें आग के अज़ाब से बचा ले। (सूरह आले इमरान 190.191)

5. मज़हब इस्लाम अकीदा और शरीअत दोनों के संग्रह का नाम है। मज़हबे इस्लाम अकीदा और शरीअत दोनों हिसाब से मुकम्मल है। यह केवल वैचारिक मज़हब नहीं बल्कि हर हिसाब से मुकम्मल है, सही अक़ीदे, हिक्मत पर आधारित मामलों और बेहतरीन अखलाक़ पर आधारित है। यह एक व्यक्ति व जमाअत सब का दीन है, यह आखिरत व दुनिया हर जहां के लिए है।

6. यह मज़हब इन्सानी भावनाओं की क़दर करता है और उस राह पर क़ायम करता है जिससे वह भलाई और रचनात्मक कामों का ज़रिया बन जाता है।

7. यह दीन न्याय है दुशमन दोस्त रिश्तेदार और अजनबी सबके साथ इन्साफ करने का हुक्म देता है।

अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है।

अल्लाह न्याय का हुक्म देता है (सूरह नहल–90)
और फरमाता है।
जब तुम बात करो तो इन्साफ करो चाहे वह रिश्ते दार ही हों। (सूरह अल अनआम, 152
एक जगह और फरमाया किसी कौम की दुश्मनी तुम्हें न्याय के खिलाफ आमादा न कर दे। न्याय किया करो जो तक़वा के ज़्यादा करीब है। (सूरह माइदा–8)
8. इस्लाम सच्ची मुहब्बत व भाई चारगी का मज़हब है मुसलमान आपस में दीनी भाई हैं उनके बीच मुल्क व वतन जिन्स व रंग व नस्ल के हिसाब से कोई फर्क़ नहीं
अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता हैः
अल्लाह के निकट तुम में सबसे ज़्यादा इज्ज़त वाला वह है जो सबसे ज़्यादा डरने वाला है। (सूरह हुजरात–13)
9. इस्लाम इल्म दीन है इस्लाम अपने मानने वालों को इल्म हासिल करने का हुक्म देता है और इस पर बहुत बड़े सवाब का वादा करता है अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है।
अल्लाह तुम में से उन लोगों के लिए जो ईमान लाए हैं और जो इल्म दिए गए हैं दर्जे बुलन्द करेगा (सूरह मुजादिला–9)
अल्लाह ने और फरमायाः बताओ तो इल्म वाले और बे इल्म वाले क्या बराबर हैं, सूरह जुमर–9
अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ईर्शाद फरमायाः इल्म सीखना हर मुसलमान पर फर्ज़ है।
10. जो कोई व्यक्ति इस्लाम मज़हब को अपनाता है और उस पर सही तरीक़े से अमल करता है तो अल्लाह उसकी

इज्ज़त को सर बुलन्द करने की ज़मानत देता है चाहे वह अकेला व्यकित हो या पूरी जमाअत हो अल्लाह ने इर्शाद फरमायाः
'तुम में से उन लोगों से जो ईमान लाए हैं और सत्कर्म किए हैं अल्लाह वादा कर चुका है कि उन्हें अवष्य ही ज़मीन में खलीफा बनाएगा जैसे कि उन लोगों को खलीफा बनाया था जो इनसे पहले थे और निष्चय ही उनके लिए उसके इस दीन को मज़बूती के साथ क़ायम करके जमा देगा जिसे उनके लिए वह पसन्द कर चुका है और उनके इस भय व खतरा को शान्ति से बदल देगा। वे मेरी इबादत करेंगे, मेरे साथ किसी को शरीक नहीं ठहरायेंगे''।
अल्लाह ने एक दूसरी जगह इर्शाद फरमायाः "जो व्यक्ति सत्कर्म करे मर्द हो या औरत लेकिन ईमान के साथ हो तो हम उसे निष्चय ही बड़ी बेहतर ज़िन्दगी प्रदान करेंगे और उनके सत्कर्मों का बदला बेहतर भी उन्हें अवष्य देंगे (सूरह नहल–17)
11. इस्लाम प्रेम, इजतिमाइयत उलफ़त और रहमत का दीन है अल्लाह के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमायाः
आपसी प्यार व मुहब्बत और मेहरबानी में मोमिनों की मिसाल एक जिस्म की तरह से है कि उसके एक अंग को यदि तकलीफ होती है तो पूरा जिस्म बुखार और बेचैनी को महसूस करता है।
अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक दूसरी हदीस में बयान फरमायाः "मेहरबानी करने वालों के साथ अल्लाह तआला भी मेहरबानी का मामला करता है।

तुम ज़मीन वालों पर मेहरबानी का मामला करो तुम पर आसमान वाला मेहरबानी का मामला करेगा।
एक दूसरी जगह इर्शाद फरमायाः
"तुम में से कोई आदमी उस समय तक सही अर्थों में मोमिन नहीं हो सकता जब तक वह अपने भाई के लिए उन्हीं चीज़ों को पसन्द न करे जो अपने लिए पसन्द करता है'
12. इस्लाम सूझ बूझ, मेहनत व लगन और अमल की तालीम देता है अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया मज़बूत मोमिन अल्लाह के निकट कमज़ोर मोमिन के मुक़बाले में पसन्दीदा और महबूब है। तुम उन चीज़ों के चाहने वाले बनो जो तुम्हें फायदा दें और इसमें कोताही न करो। यदि तुम्हें कोई चीज़ लाहिक हो तो यह न कहो कि यदि मैं इस तरह से किया होता तो ऐसा हुआ होता, बल्कि यह कहो अल्लाह ने भाग्य में लिख रखी थी और अल्लाह ने जो चाहा वही हुआ
13. इस्लाम तजाद (विभेद) और कमियों से पाक है। अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता हैः
यदि ये अल्लाह तआला के सिवा किसी और की तरफ से होता तो निश्चय ही इसमें बहुत कुछ मतभेद होता। (सूरह निसा 82)
14.इस्लाम एक वाजह और आसान मजहब है जो हर एक के लिए समझना आसान है,
15. इस्लाम मज़हब का दरवाज़ा हर आदमी के लिए हमेशा खुला हुआ है जो कोई इसे सीखना चाहता है और इसमें दाखिल होना चाहता है तो उसके लिए इसका दरवाज़ा बन्द नहीं होता है।

16. इस्लाम अच्छे अखलाक और अच्छे आमाल कि दावत देता है अल्लाह तआला ने फरमायाः दरगुजर को अख्तयार करो और अच्छे काम का हुक्म दो और जाहिलो से अलग रहो, सूरह अलआराफ,199
तुम बदी को नेकी से दूर करो (सूरह फुस्सिलत 34)
लोग जन्नत में सबसे ज़्यादा अल्लाह के भय और अच्छे अखलाक़ की वजह से जाएंगे।
एक हदीस में आया है
"लोगों में कामिल तरीन ईमान वाला आदमी वह है जिसके अखलाक़ सबसे बेहतर हों"।
और फरमाया अल्लाह की निगाह में बससे महबूब वह है जो सबसे ज़्यादा लाभदायक हो। अल्लाह की निगाह में सबसे बेहतर अमल यह है कि आप किसी मुसलमान को खुश कर दें या उसकी मुसीबत को खत्म कर सकें या उसका कोई कर्ज अदा कर दें या उसकी भूख मिटा दें। मेरी निगाह में मेरा अपने किसी मुसलमान भाई की ज़रूरत पूरी करने के लिए चलना मस्जिद में एक महीने एतिकाफ में बैठने से ज़्यादा महबूब है।
16. इस्लाम मज़हब अक्लों की हिफाज़त पर खास ध्यान देता है इसी वजह से इस्लाम ने शराब, ड्रग्स और अन्य उन तमाम चीज़ों को हराम करार दिया है जो अक्ल की खराबी और जान के विनाष का सबब बनती हैं। अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया है और अपने आप को कत्ल न करो निष्चय ही अल्लाह तुम पर बहुत मेहरबान है(सूरह निसा 29)
17. इस्लाम माल व दौलत की हिफाज़त पर खास ध्यान देता है यही वजह है कि इस्लाम मज़हब ने ईमान दारी पर

उभारा है और ईमान दारों की प्रशंसा की है और उनके लिए खुशहाल जीवन और जन्नत में दाखिल होने का वादा किया है इस्लाम ने चोरी को हराम ठहराया है और चोरी करने वालों को दुनिया व आखिरत में अजाब की सूचना दी है ताकि कोई आदमी माल व दौलत को चोरी करने और लोगों को डराने का साहस न कर सके।

18. इस्लाम जानवरों की हिफाज़त की ओर ध्यान देता है यही वजह है कि इस्लाम मज़हब ने कत्ल को हराम ठहराया है और कत्ल की सज़ा कत्ल बताई है और कातिल को कियामत के दिन सदैव जहन्नम में रहने की सजा सुनाई है अतएवं जिन मुस्लिम देषों में यह इस्लामी जीवन प्रणाली मौजूद है उनमें आप देखेंगे कि कत्ल के मामले बहुत ही कम पेश आते हैं। जब इन्सान को मालूम होगा कि वह किसी को कत्ल करेगा तो उसकी सज़ा में उसे भी कत्ल कर दिया जाएगा तो वह क़त्ल से बाज़ रहेगा और लोग अपराधियों के फित्ने से नजात पा जाएंगे।

19. इस्लाम सेहत व तन्दुरुस्ती का भी खास ध्यान रखता है अल्लाह ने इरशाद फरमायाः

और खूब खाओ और पियो और सीमा से आगे न निकलो बेशक अल्लाह सीमा को पार करने वालों को पसन्द नहीं करता। (सूरह आराफ 31)

उलमा कहते हैं कि इस आयत में तिब्ब की सारी हिदायतें मौजूद हैं क्योंकि खाने पीने में बीच की राह को अपनाना सेहत व चिकित्सा के अहम तरीन नियमों में से है।

इसी प्रकार इस्लाम मज़हब में सेहत की हिफाज़त के उसूलों में शराब व मादक पदार्थ भी हराम हैं क्योंकि ये

चीज़ें सेहत के लिए किस हद तक हानिकारक हैं यह किसी से छुपा नहीं इसी तरह इस्लाम मज़हब ने जिना और इगलाम बाज़ी को हराम ठहराया है क्योंकि ये भी बड़ी हद तक हानिकारक हैं जिनमें कुछ हानि जिस्मानी भी हैं जैसे सूज़ाक आतिष्क सीलान हरबस और एडस आदि बीमारियां हैं।

20. इस्लाम मज़हब इन्सान को आजादी प्रदान करता है और उस आज़ादी की कुछ सीमाएं भी उसने बतायी हैं। इस्लाम मज़हब के अन्दर एक इन्सान खरीद व फरोख्त तिजारत और यातायात आदि के ताल्लुक से आज़ाद है बषर्ते कि वह धोखा धड़ी बेइमानी और फसाद की चीज़ों को अंजाम देकर सीमाओं को न फलांगे।

यहां तक कि वह किसी हराम काम को न करे जिसका नुक्सान स्वयं उसकी ज़ात पर पड़े या उसके सिवा किसी दूसरे को उसका नुक़्सान हो।

इस्लाम की कुछ खूबियां

इस्लाम आया ताकि वह इन्सानों को वे तमाम चीज़ें सिखा दे जिनकी इस दुनिया में उसे ज़रूरत पड़ती है और दुनिया की व आखिरत की जिन्दगी में जो उसके लिए सौभाग्य का सबब हैं। इस्लाम के आदेश व नियमों पर निगाह डालने से उसकी खूबियां नज़र आती हैं उन खूबियों में से कुछ ये हैं।

इस्लामी अहकामात की खूबियां

1. इस्लाम ने ऐसे अहकाम दिए जिनको अपनाने से इन्सान अपने से कमतर जानवरों की समानता या अपनी इच्छाओं का बन्दा होने से मुमताज़ हो सकता है और वह अल्लाह

के सिवा दूसरी मख्लूक का सम्मान करने या पालनहार के सिवा दूसरे के लिए खुशूअ खुजूअ विनम्रता अपनाने से बुलन्द दर्जा हो सकता है।

2. इस्लाम अक़्ल व जिस्मानी अंगों को दीन व दुनिया के हिसाब से बेहतर कामों में इस्तेमाल करने का हुक्म देता है जिनके लिए उन्हें पैदा किया गया है।

3. इस्लाम केवल खास अल्लाह तआला की इबादत और उसके सिवा दूसरे बातिल उपास्यों के इन्कार का हुक्म देता है

4. इस्लाम लोगों की ज़रूरतें पूरी करने और उनकी मदद करने पर उभारता है।

5. इस्लाम रोगियों की देखभाल और सेवा करने जनाज़ा के पीछे जाने, कब्रस्तान की जियारत करने और मुसलमानों के लिए दुआएं करने का हुक्म देता है।

6. इस्लाम लोगों के साथ न्याय का मामला करने और उन पर जुल्म न करने का हुक्म देता है और लोगों के लिए उसी चीज़ को पसन्द करने की ताकीद करता है जिसे हम अपने लिए पसन्द करते हैं।

7. इस्लाम रोज़ी के लिए प्रयास करने और इन्सान को अपने नफ्स को इज्ज़तदार बनाने और जिल्लत व हाथ फैलाने की जगहों से दूर रहने की तालीम देता है।

8. इस्लाम सारी मख्लूक़ पर मेहरबानी करने, उनके साथ प्यार व हमदर्दी का मामला करने और उनके फायदे के लिए कोशिश करने और उनकी बुराइयों व हानियों को दूर करने का हुक्म देता है।

9. इस्लाम मां बाप के साथ सद व्यवहार करने, रिष्ते नाते को जोड़ने पड़ौसी की इज्ज़त करने और जानवरों के साथ नर्मी करने का हुम्म देता है।

10. इस्लाम दोस्तों के साथ वफादारी और बाल बच्चों के साथ बेहतर मामला करने का हुक्म देता है।

11. इस्लाम ईमानदारी, अमानतदारी, वायदे को पूरा करने, अच्छी भावना रखने, कामों में मिठास व नर्मी और नेकी में आगे बढ़कर काम करने का हुक्म देता है।

इनके अलावा भी दूसरे बहुत से अहम और बेहतर अहकामात हैं।

2. वे बातें जिनसे इस्लाम रोकता है।

1. इस्लाम ने कुफ्र और अल्लाह का साझी ठहराने से मना किया है

2. इस्लाम मज़हब ने गर्व, घमंड, हसद व जलन, खुद पसन्दी और पीड़ित लोगों की मुसीबतों पर खुश होने से रोका है

3. इस्लाम ने बदगुमानी, बदफाली, निराशा, कंजूसी और फिजूल खर्ची से रोका है।

4. इस्लाम ने सुस्ती बुजदिली कमजोरी बेकारी, जल्द बाज़ी, सख्ती, बेशर्मी, बेसब्री, क्रोध उत्तेजना और बर्बाद होने वाली चीज़ों से रोका है।

5. इस्लाम दुष्मनी और ऐसी संग दिली से रोकता है जो लाचारों और परेशान लोगों की मदद करने में बाधक हो।

6. इस्लाम गीबत से मना करता है गीबत उसे कहते हैं कि आप लोगों के बारे में ऐसी बातें करें जिन्हें वे ना पसन्द करते हों और इसी तरह से चुग़ली को भी इस्लाम हराम

करार देता है चुगली यह है कि लोगों में झगड़ा कराने के मक़सद से उन बातों को नक़्ल किया जाए।
7. इस्लाम बेफायदा ज्यादा बोलने, राज खोलने लोगों का उपहास उड़ाने और दूसरों का अपमान करने से रोकता हे।
8. इस्लाम गाली गलोच करने लानत भेजने व्यंग करने, बुरा भला कहने और बुरे नामों से पुकारने से मना करता है
9. इस्लाम ज़्यादा बहस व वाद विवाद करने और गन्दे मज़ाक़ जो कि फसाद का सबब बनते हैं, उनसे रोकता है।
10. इस्लाम गवाही छुपाने झूठी गवाही देने, पाकदामन औरतों पर जिना की तोहमत लगाने, मुर्दों को गालियां देने और इल्म छुपाने से रोकता है।
11. मूर्खता, अशलीलता, सदक़ा देकर अहसान जताना और भलाई करने वाले का शुक्रिया न अदा करने को इस्लाम ना पसन्द करता है।
12. इस्लाम बेइमानी, धोखा, चाल बाज़ी और वादा खिलाफी से मना करता है।
13. मां बाप की नाफरमानी करने रिष्ते नाते तोड़ने और औलाद को बेसहारा छोड़ने से इस्लाम मना करता है।
14. जासूसी और लोगों के दोष तलाश करने को इस्लाम ना पसन्द करता है।
15. इस्लाम मर्दों को औरतों की समानता इख्तियार करने से और औरतों की मर्दों के जैसा बनने से मना करता है।
16. इस्लाम शराब नोशी मादक पदार्थ के इस्तेमाल और जुवे बाज़ी से रोकता है जिससे जान व माल को खतरा पैदा हो जाता है।

17. इस्लाम झूठी क़सम खाकर सामान बेचने, नाप तोल में कमी करने, हराम जगहों पर माल खर्च करने और पड़ौसियों को तकलीफ देने से मना करता है।
18. इस्लाम चोरी का माल हड़पने एक साझी का दूसरे साझी के साथ बेइमानी करने मजदूर की मज़दूरी देने में देरी करने या काम पूरा होने पर मज़दूरी देने से इन्कार करने से मना करता है।
19. इस्लाम अधिक खाने से रोकता है जो इन्सान के लिए हानिकारक है।
20. इस्लाम ताल्लुक जोड़ने, आप सी रंजिश और दुष्मनी रखने से रोकता है इस्लाम ने एक मुसलमान को मना किया है कि वह अपने मुसलमान भाई से तीन दिनों से ज़्यादा ताल्लुक न तोड़े रखे।
21. इस्लाम किसी को बिना शरअी वजह के मारने और हाथियार के जरिये लोगों को डराने से मना करता है।
22. इस्लाम ज़िना, इगलाम बाज़ी और ना हक़ जान से मारने से रोकता है।
23. इस्लाम रिष्वत लेने और देने से मना करता है।
24. ताक़त के बावजूद मज़लूम को बे यारो मदद गार छोड़ने को इस्लाम नापसन्द करता है।
25. इस्लाम दूसरों के घरों में बिना इजाज़त झांकने से मना करता है और जो लोग दूसरों को अपनी बात सुनाना ना पसन्द करते हों उनकी बात सुनने को हराम क़रार देता है।

आख़िरत का दिन

कोई इन्सान उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वह आखिरत और उससे संबधित चीज़ों और वहां पेश आने वाले मामलों पर ईमान न ले जिस दिन के बारे में अल्लाह इर्शाद फरमाता है उस दिन कैसे बचोगे जो दिन बच्चों को बूढ़ा कर देगा। (सूरह मुज्जम्मिल–17)

इन्हीं में से एक मौत है। मौत इस दुनिया में हर जिन्दा चीज़ के खत्म हो जाने का नाम मौत है अल्लाह इर्शाद फरमाता है।

हर नफ्स को मौत का मज़ा चखना है। (सूरह आले इमरान)

अल्लाह ने और फरमायाः ज़मीन पर जो है सब फना होने वाला है। (रहमान–26)

अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुखातिब करते हुए फरमाया स्वयं आपको भी निष्चय ही मौत आएगी और ये सब भी मरने वाले हैं फिर तुम सबके सब कियामत के दिन अपने दाता के सामने झगड़ोगे। (सूरह जुमर 30–31)

इस दुनिया में कोई भी इन्सान सदैव जिन्दा नहीं रहेगा अल्लाह ने इसी हक़ीकत को बयान करते हुए इर्शाद फरामया

आप से पहले किसी इन्सान को भी हमने सदैव रहने नहीं दिया। (सूरह निसा–34)

यहां कुछ बातों की ओर इशारा करना मुनासिब है।

1. बहुत लोग मौत से गफ़लत बरतते हैं जबकि मौत एक अटल हक़ीकत है जिसमें किसी भी तरह सन्देह की

गुंजाइश नहीं है मुर्दा अपने साथ कब्र में सांसारिक सामान नहीं ले जाता है बल्कि उसके साथ उसका अमल रहता है। उसका अमल नेक होगा तो वह पूरी तरह कामयाब होगा और नजात पाएगा, अलबत्ता जिसका अमल भला नहीं होगा वह नाकाम व नामुराद होगा।

2. इन्सान की उम्र का कोई भरोसा नहीं उसका पता तो अल्लाह के सिवा किसी को भी नहीं होता है। कोई आदमी न तो यह जानता है कि उसकी मौत कब होगी, न यह जानता है कि उसकी मौत कहां होगी, क्योंकि यह गैबी चीज़ है जिसे केवल अल्लाह ही जानता है।

3. जब मौत आ जाएगी तो उससे दूर रहना या समय को टाल देना या उससे भाग जाना मुमकिन नहीं है अल्लाह ने इर्शाद फरमाया है और हर गिरोह के लिए एक एक समय निष्चित है तो जिस समय उनका समय आ जाएगा उस समय एक घड़ी न पीछे हट सकेगी और न आगे बढ सकेगी। (सूरह आराफ 34)

4. मोमिन को जब मौत आती है तो उसके पास मलकुल मौत अच्छी शक्ल व सूरत और अच्छी खुशबू के साथ आता है और मलकुल मौत के साथ दूसरे रहमत के फरिष्ते भी आते हैं जो उसे जन्नत की खुश खबरी सुनाते हैं। अल्लाह इर्शाद फरमाता है।

बेशक जिन लोगों ने यह कहा था कि हमारा पालनहार केवल अल्लाह है और अपनी इस बात पर बराबर जमे रहे उनपर फरिष्ते नाज़िल होंगे और कहेंगे कि तुम न भय करो न डरो बल्कि बशारत सुन लो उस जन्नत की जिस का तुम से वादा किया जाता था। (सूरह स्सिलम–30)

अल बत्ता काफिरों के पास मलकुल मौत डरावनी शक्ल काली कलौटी सूरत और बुरे रूप में आता है और उसके अज़ाब के फरिष्ते भी आते हैं और उसे अज़ाब की सूचना देते हैं। अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया।

और यदि आप उस समय देखें जबकि ये जालिम लोग मौत की सख्तियों में होंगे और फरिष्ते अपने हाथ बढ़ा रहे होंगे कि हां अपनी जानें निकालो आज तुमको हीनता व जिल्लत की सज़ा दी जाएगी, इस सबब से कि तुम अल्लाह के ऊपर झूठी बातें लगाते थे तुम अल्लाह की आयतों से घमंड करते थे।

जब मौत आती है तो सारी हक़ीक़त सामने आ जाती है और हर इन्सान का मामला खुल जाता है। अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है।

यहां तक कि जब उनमें से किसी को मौत आने लगती है तो कहता है कि ऐ मेरे पालन हार! मुझे वापस लौटा दे कि अपनी छोड़ी हुई दुनिया में जाकर अच्छे काम कर लूं, कभी ऐसा नहीं होगा यह तो केवल एक बात है जिसे यह मानता है उनके पीछे तो एक हिजाब है उनके दोबारा जी उठने के दिन तक। (सूरह मोमिनून 99–100)

जब मौत आती है तो काफिर और गुनाहगार इन्सान सांसारिक जीवन में वापस जाना चाहता है ताकि वह अच्छे काम कर सके लेकिन समय निकल जाने के बाद नदामत किसी काम की न होगी।

अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है...

ज़ालिम लोग अज़ाब को देख कर कह रहे होंगे कि क्या वापस जाने की कोई राह है। (सूरह षूरा–44)

कब्रः यह आखिरत की पहली मंज़िल है जो इस मन्ज़िल में कामयाबी हासिल कर लेगा उसके बाद की मंज़िलें उसके लिए आसान होंगी, अल बत्ता जो इस मंज़िल में नजात नहीं पा सकता उसके लिए बाद की मंजिले बड़ी सख्त होंगी हजरत अनस रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया मय्यित को जब कब्र में रखा जाता है और उसके साथी वापस होते हैं तो वह उनके जूतों की आवाज़ सुनता है।
अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने और फरमायाः फिर उसके बाद फरिष्ते आते हैं और उसे बिठाते हैं और उससे कहते है तुम उस आदमी के बारे में क्या कहते थे? यदि वह मोमिन होगा तो कहेगा मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं फिर उससे कहा जाता है कि जहन्नम में अपनी जगह देख लो, जिसे अल्लाह ने जन्नत की जगह से बदल दिया है।
अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आगे इर्शाद फरमाया वह व्यक्ति दोनों जगहों को देखेगा यदि मरने वाला व्यक्ति काफिर या कपटी हो तो इस सवाल के जवाब में कहेगा मुझे नहीं मालूम मैं लोगों से सुनता था कि वे कुछ कहा करते थे वही मैं भी कहा करता था तो उससे कहा जाता है कि न तो तुम्हें मालूम हुआ और न ही तुमने जानने की कोशिश की उसके बाद उसके दोनों कानों के बीच से लोहे की हथोड़ी से मारा जाता है जिसकी वजह से वह इतने जोर से चीखता है कि इन्सान व जिन्नात के सिवा उसके आस पास मौजूद हर मखलूक उसकी चीख सुनती है।

कब्र में रूह का लौटना आखिरत के मामलों में से है जिसको सांसारिक जिन्दगी में इन्सान समझ ही नहीं सकता अल्लाह ने कुरआन मजीद में बयान किया है कि यदि इन्सान मोमिन हो और नेमतों का हक़दार हो तो उसे कब्र से ही नेमतों से नवाज़ा जाता है और यदि अज़ाब का हक़दार हो तो क़ब ही में अज़ाब से दोचार किया जाता है अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमायाः आग है जिसके सामने ये हर सुबह व शाम लाए जाते हैं और जिस दिन कियामत कायम होगी, फरमान होगा कि फिरऔनियों को सख्त से सख्त अज़ाब में डालो। (सूरह गाफिर 46)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया तुम लोग कब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह चाहो हमारी अक्ल इन चीज़ों का इन्कार नहीं कर सकती है क्योंकि इन्सान सांसारिक जीवन में इससे निकट वाली चीज़ों को देखता है जैसा कि सोने वाला इन्सान महसूस करता है कि उसे अज़ाब दिया जा रहा है वह चीखता है चिल्लाता है और मदद मांगता है जबकि उसकी बगल में सोया हुआ इन्सान इस प्रकार की किसी चीज़ को महसूस नहीं कर रहा होता जबकि मौत और जिन्दगी में बहुत बड़ा फर्क़ है क़ब्र में अज़ाब रूह व जिस्म दोनों को होता है अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमायाः कब्र आखिरत की मंजिलों में से पहली मंज़िल है यदि इन्सान इसमें नजात पा जाएगा तो उसके बाद की मंजिलें आसान होंगी लेकिन यदि इन्सान इसमें नजात नहीं पा सकेगा तो बाद की मंज़िलें इससे और सख्त होंगी।

इसी वजह से एक मुसलमान को कब्र के अज़ाब से ज़्यादा से ज़्यादा पनाह मांगने की तालीम दी गयी है खास तौर से नमाज़ में सलाम फेरने से पहले और इन्सान को बुराइयों से दूर रहने की भी तालीम दी गयी है जो कब्र और जहन्नम में अज़ाब से दोचार होने का सबसे पहला सबब है इस अज़ाब को अज़ाबे कब्र कहा जाता है इस वजह से कि अधिकांष लोगों को कब्र में दफन किया जाता है वर्ना डूब कर जल कर मरने वाले या उस आदमी को जिसे दरिन्दों ने खा लिया हो, को भी बरज़ख में अज़ाब दिया जाता है।

अज़ाबे क़ब्र में लोहे के हथोड़े से मारा जाता है और इसके सिवा दूसरी तरह का भी अज़ाब दिया जाता है जैसे कब्र में घोर अंधेरा कर दिया जाता है या जहन्नम की आग का बिस्तर कर दिया जाता है और उसके लिए जहन्नम का दरवाज़ा खोल दिया जाता है और उसके अमल को बद सूरत बदबूदार इन्सान का रूप दे दिया जाता है जो उसके साथ कब्र में बैठता है यदि इन्सान काफिर या कपटी हो तो वह अज़ाब का बराबर शिकार रहेगा लेकिन यदि इन्सान मोमिन हो जिससे गुनाह हुए हों तो उसके गुनाहों के हिसाब से अज़ाब अलग अलग होगा और उसका अज़ाब खत्म भी हो सकता है।

जहां तक मामला मोमिन का है तो कब्र में उसे नेमतों से नवाज़ा जाता है इसी के साथ उसको कब्र का मुशाहिदा करा दिया जाता है और नूर से भर दिया जाता है और उसके लिए जन्नत का एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है जिससे जन्नत की खष्बू की महक आती है और उसके

लिए जन्नत का बिछौना कर दिया जाता है और उसके अमल को एक सुन्दर इन्सान का रूप दे दिया जाता है जिस से वह कब्र में हमदर्दी हासिल करता है।

कियामत और उसकी निशानियों का बयान

1. अल्लाह ने इस कायनात को सदैव बाकी रहने के लिए नहीं बनाया है बल्कि एक दिन ऐसा आएगा जब यह कायनात खत्म हो जाएगी। यही वह दिन होगा जिसमें कियामत होगी कियामत का होना हक़ है जिसमें शक का कोई सवाल ही नहीं अल्लाह ने कुरआन में इर्शाद फरमाया है क़ियामत आने वाली है और इसमें किसी तरह का कोई शक नहीं है। (सूरह गाफिर 59)

काफिर कहते हैं कि हम पर कियामत नहीं आएगी आप कह दीजिए कि मुझे मेरे पालनहार की कसम, वह निश्चय ही तुम पर आएगी। (सूरह सबा–3)

क़ियामत का इल्म गैबी मामलों में से है जिसकी जानकारी को अल्लाह ने छिपा रखा है और अपनी मख्लूक में से किसी को भी इससे आगाह नहीं किया है। अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमायाः

लोग आप से कियामत के बारे में सवाल करते हैं आप कह दीजिये कि इसका पता तो अल्लाह तआला ही को है आपको क्या खबर हो सकता है कियामत बिल्कुल ही करीब हो। (सूरह अहज़ाब–62)

2. कियामत बुरे लोगों पर कायम होगी इसकी कैफियत यह होगी कि अल्लाह तआला कियामत से पहले एक पवित्र हवा भेजेगा जो मोमिनों की रूहों को निकाल लेगी जब अल्लाह तआला सारी मख्लूक को मौत से दो चार

और सारी दुनिया को खत्म करना चाहेगा तो फरिष्ते को सूर (मौत का बड़ा भौंपू फूंकने) का हुक्म देगा जिसकी आवाज़ सुनकर लोग बेहोश हो जाएंगे अल्लाह तआला फरमाता है:
और सूर फूंक दिया जाएगा तो आसमानों और ज़मीन वाले सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे मगर जिसे अल्लाह चाहे (ज़ुमर 68)
जिस दिन कियामत कायम होगी वह जुमा का दिन होगा, इसके बाद सारे फरिष्ते भी खत्म हो जाएंगे और केवल अल्लाह ही की ज़ात बाक़ी रह जाएगी।
3. अजबुज्जुनुब (पीठ के नीचे मौजूद हड्डी) के सिवा पूरा इन्सानी वजूद खत्म हो जाएगा और उसे मिटटी खा जाएगी। अलबत्ता नबियों के जिस्मों को मिटटी नहीं खाती है। फिर अल्लाह तआला आसमान से वर्षा करेगा जिससे इन्सान के जिस्म उग जाएंगे जब अल्लाह लोगों को दोबारा जिन्दा करना चाहेगा तो सूर फूंकने के जिम्मेदार फरिष्ते इसराफील अलैहि को जिन्दा करेगा अतएवं वे सूर में दोबारा फूंक मारेंगे तो अल्लाह तआला सारी मख्लूक़ को जिन्दा कर देगा और लोग अपनी कब्रों से इसी तरह से नंगे पांव नंगे जिस्म और बिना खत्ना की हालत में निकलेंगे, जिस तरह से अल्लाह ने उन्हें पहली बार पैदा किया था।
अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है और सूर में फूंका जाएगा तो लोग अपनी कब्रों से निकल कर अपने पालनहार की बारगाह की तरफ दौड़ पड़ेंगे (सूरह यासीन 51)
सबसे पहले नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कब्र से निकलेंगे इसके बाद लोगों को मैदाने हश्र में जो बड़ा

ही कुशादा मैदान होगा वहां ले जाया जाएगा उस समय सूरज को लोगों से करीब कर दिया जाएगा।
लोग हश्र के मैदान में एक लम्बी मुददत तक हिसाब किताब के इन्तिज़ार में रुके रहेंगे इसके बाद अल्लाह तआला लोगों के बीच फैसले का हुक्म देगा उस समय पुल सिरात नसब किया जाएगा। सिरात एक पुल होगा जो बाल से ज्यादा बारीक और तलवार से ज़्यादा तेज़ होगा। उसे जहन्नम के ऊपर फिट किया जाएगा। लोग अपने आमाल के हिसाब से उसपर से गुज़र जाएंगे कुछ लोग पलक झपकने की तरह से गुज़र जाएंगे तो कुछ हवा की तरह से, कुछ बेहतरीन घोड़ों की रफतार से तो कुछ लोग सुरीन के बल घिसटते हुए पुल सिरात को पार करेंगे।
पुल सिरात पर शिकन्जे लगे होंगे जो लोगों को उचक लेंगे और उन्हें जहन्नम में डाल देंगे काफिरों और मोमिनों में से गुनाहगार लोग जिन्हें अल्लाह चाहेगा वे जहन्नम में गिर जाएंगे काफिर सदैव के लिए जहन्नम में रहेंगे जबकि मोमिन जिन से गुनाह हुए होंगे उन्हें अल्लाह जितना चाहेगा अज़ाब देगा फिर उन्हें जहन्नम से निकाल कर जन्नत में दाखिल कर देगा।
सिरात को पार करने वाले लोग जन्नत व जहन्नम के बीच एक पुल पर रुकेंगे जहां एक दूसरे का बदला दिया जाएगा उनमें से जिसके जिम्मे उसके भाई का कोई हक़ होगा तो जब तक बदला नहीं दिला दिया जाएगा और हर एक का दिल दूसरे के लिए ठीक नहीं हो जाएगा वह जन्नत में दाखिल नहीं होगा जब जन्नती जन्नत में और जहन्नमी जहन्नम में दाखिल हो जायेंगे तो मौत को एक

मेढे के रूप में लाया जाएगा और उसे जन्नत व जहन्नम के बीच ज़बह कर दिया जाएगा। इस बात को जन्नती व जहन्नमी दोनों देख लेंगे इसके बाद कहा जाएगा कि जन्नतियों अब सदैव के लिए जन्नत में रहना है मौत नहीं आएगी जहन्नमियों अब सदैव जिन्दा रहना है मौत नहीं आएगी। उस समय यदि खुशी से मरना संभव होता तो जन्नती मारे खुशी के मर जाते और यदि गम से मरना संभव होता तो जहन्नमी दुख व पीड़ा की वजह से मर जाते

जहन्नम और उसके अज़ाब का बयान

अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमायाः उस आग से बचो जिसका ईंधन इन्सान और पत्थर हैं जो काफिरों के लिए तैयार की गयी है। (सूरह बकरा 24)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम रजियल्लाहु अन्हुम से बयान किया तुम लोग जिस आग को रोशन करते हो वह जहन्नम की आग का 70 वां हिस्सा है। सहाबा ने अर्ज किया किया ऐ अल्लाह के रसूल! यह आग ही अज़ाब के लिए काफी थी यह सुनकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया वह 69 गुना अधिक है और हर आग इसी सांसारिक आग की तरह गर्म है।

जहन्नम के सात तबक़े हैं हर तबक़े में पहले के मुकाबले ज़्यादा कठोर अज़ाब दिया जाता है और हर दर्जे में अपने कर्मों के हिसाब से कुछ लोग होंगे। सबसे निचले दर्जे में जहां का अज़ाब सबसे कठोर होगा कपटी होंगे काफिरों को अज़ाब दिए जाने का सिलसिला सदैव चलता रहेगा वह कभी खत्म नहीं होगा जब जब वे जल जाएंगे तो और

अज़ाब दिए जाने के लिए उन्हें पहली हालत की तरफ लौटाया जाएगा। अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है जब उनकी खालें पक जायेंगी हम उनके सिवा और खालें बदल देंगे ताकि वे अज़ाब चखते रहें। (सूरह निसा–56)
एक दूसरी जगह इर्शाद फरमाया और जो लोग काफिर हैं उनके लिए जहन्नम की आग है न तो उनको मौत ही आएगी कि मर ही जाएं और न जहन्नम का अज़ाब ही हल्का किया जाएगा हम काफिर को ऐसी ही सज़ा देते हैं (फातिर 36)
जहन्नम में काफिरों को बेड़ियों में जकड़ दिया जाएगा और उनकी गर्दनों में तौक डाल दिए जाएंगे अल्लाह तआला फरमाता है और उस दिन गुनाह गारों को देखेंगे कि ज़ंजीरों में मिले जुले एक जगह जकड़े हुए होंगे उनके लिबास गधक न होंगे और आग उनके चेहरों पर भी चढ़ी हुई होगी जहन्नमी थूहड़ का फल खाएंगे (सूरह इब्राहीम 49–50)
अल्लाह तआला फरमाता है बेशक ज़क्कूम थूहड़ का पेड़ गुनाह गार खाता है जो तलछट की तरह है और पेट खौलता रहता है तेज़ गर्म पानी की तरह। (सूरह दुखान 43.46)
जहन्नम के अज़ाब की सख़्ती और जन्नत की नेमतों की ज़्यादती का अन्दाज़ा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस हदीस से लगाया जा सकता है जिसमें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया है कियामत के दिन दुनिया के सबसे ऐश व आराम में रहे जहन्नमी इन्सान को लाया जाएगा और उसे जहन्नम में डुबकी लगायी जाएगी और उससे पूछा जाएगा ऐ इब्ने आदम क्या तुम्हें कभी सुख चैन मिला है? क्या तुम्हें नेमत हासिल हुई है? वह कहेगा नहीं अल्लाह की कसम मेरे पालनहार नहीं

इसके बाद दुनिया के सबसे मोहताज निर्धन जन्नती को लाया जाएगा उसे जन्नत में कुछ मुददत के लिए भेजा जाएगा और उससे मालूम किया जाएगा क्या तुम्हें कभी मोहताजी पैदा हुई थी? क्या तुम कभी सख्त हालात से दोचार हुए थे? वह कहेगा नहीं मेरे पालनहार अल्लाह की कसम न तो मुझे कभी मोहताजी पैदा हुई और न ही मुझ पर कभी सख्त हालात आए।

काफिर इन्सान जहन्नम की एक डुबकी ही से संसार के सारे ऐशो आराम नेमतों को भूल जाएगा और मोमिन इंसान जन्नत में एक क्षण गुज़ारने की वजह से सांसारिक मुसीबतों व कठोर हालात को भुला देगा।

जन्नत और उसकी नेमतों का बयान

जन्नत सदैव रहने और आदर सम्मान की जगह है अल्लाह ने इसे अपने सदा चारी बन्दों के लिए तैयार किया है। इसमें ऐसी नेमतें हैं जिन्हें आखों ने देखा है न कानों ने सुना है और न ही किसी इन्सान के दिल में उनका ख्याल आया है। अल्लाह तआला फरमाता है कोई नफ्स नहीं जानता जो हमने उनकी आखों की ठंडक उनके लिए पोशीदा कर रखी है जो कुछ करते थे यह उसका बदला है। (सूरह सजदा–17)

जन्नत के बहुत से अलग अलग दर्जे हैं इसमें मोमिनों के ठिकाने उनके आमाल के हिसाब से दिए जाएंगे अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमाया अल्लाह तआला तुम में से उन लोगों की जो ईमान लाए हैं और जिनको इल्म दिया गया है दर्जे बुलन्द कर देगा। (सूरह मुजादिला 11)

जन्नती लोग जन्नत में जो चाहेंगे खाएं पिएंगे, उसमें पानी की नहरें हैं जो बदबूदार नहीं हैं और इसकी नहरें हैं जिसका स्वाद बदला नहीं है साफ सुथरी शहद की नहरें होंगी और शराब की भी नहरें होंगी जिससे पीने वालों को आनन्द व मज़ा हासिल होगा अल बत्ता उनकी शराब दुनिया की शराब जैसी न होगी। अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है:

बहने वाला शराब के जाम का उन पर दौर चल रहा होगा जो साफ सुथरी और पीने में स्वादिष्ठ होगी, न उससे सर दर्द हो न उसके पीने से बहकें। (सूरह साफफात 45.46)

जन्नती जन्नत में हूरे ईन से शादी करेंगे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया यदि जन्नत की कोई औरत ज़मीन वालों की तरफ झांक दे तो आसमान व ज़मीन के बीच खाली जगह को रोशन कर दे और उसे खुश्बू से भर दे।

जन्नतियों के लिए सबसे बड़ी नेमत अल्लाह का दीदार होगा जन्नत वालों को पेशाब पाखाने की ज़रूरत नहीं होगी वे न खेखारेंगे न ही थूंकेंगे उनकी कंघियां सोने की होंगी और उनका पसीना मुष्क होगा उन्हें मिलने वाली नेमतें सदैव के लिए होंगी, न कभी खत्म होंगी और न ही कम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया जन्नत में जो कोई दाखिल होगा वह ऐश करेगा, मोहताजी से दोचार नहीं होगा न उसके कपड़े पुराने होंगे और न ही उसकी जवानी खत्म होगी सबसे कम हैसियत जन्नती ईमान वालों में से जो सबसे बाद में जन्नत से निकलेगा और जन्नत में दाखिल होगा उस जन्नती के हिस्से में आने वाली नेमतें पूरी दुनिया से दस गुना ज़्यादा बेहतर होंगी।

इस्लाम में औरत का स्थान व दर्जा

इस्लाम में औरत के हकों के बारे में बात करने से पहले बेहतर होगा कि हम औरत के बारे में दूसरी कौमों के कुछ उसूल व नज़रियात को बयान करें कि उनके यहां औरतों के साथ किस प्रकार का मामला किया जाता था। यूनानियों के यहां औरतों को खरीदा व बेचा जाता था, उन्हें किसी भी प्रकार के हक हासिल नहीं थे सारे हक़ मर्दों की जागीर थे। औरतें विरासत में हिस्सा पाने से भी महरूम थीं।

यूनानियों का प्रसिद्ध फलसफी सुकरात कहता है कि दुनिया के पतन व गिरावट की सबसे बड़ी वजह औरतों का वजूद है औरत उस ज़हरीले पेड़ जैसी है जिसका बाहरी रूप तो बड़ा सुन्दर होता है मगर उसे परिन्दे खाते हैं तो तुरन्त मर जाते हैं।

रूमियों का अकीदा था कि औरतों में रूह होती ही नहीं है उनके यहां औरतों को न तो कोई स्थान और न ही कोई हक़ हासिल था उबलता हुआ तेल उंडेल कर और उन्हें खम्बों से बांधकर सजा दिया करते थे बल्कि मासूम औरतों को घोड़ों की पूछ से बांध देते और घोड़ों को तेज़ गति से दौड़ाते यहां तक कि उनकी मौत हो जाया करती थी।

औरतों के बारे में हिन्दुओं का भी यही नज़रिया था बल्कि एक कदम आगे बढ़े हुए थे कि पति के मरने के बाद औरत को जला दिया करते थे चीनियों ने औरतों को उस हानिकारक पानी से मिसाल दी है जो खुश हाली और माल व दौलत को बहा ले जाता है एक चीनी को यह हक़

हासिल था कि वह अपनी बीवी को बेच या उसे जिन्दा जमीन में दबा दे।

यहूदी औरतों को लानत योग्य समझते हैं क्योंकि औरत की ज़ात ही ने आदम अलैहिस्सलाम को गुमराह किया और उन्हें पेड़ का फल खिलाया इसी तरह से औरत जब हैज़ से होती है तो उसे अपवित्र मानते हैं उसकी वजह से घर और उसका छुवा हुआ सामान नापाक हो जाता है इसी तरह से यहूदी कहते हैं कि यदि औरत के भाई हों तो वह अपने बाप के माल से मीरास की हक़दार नहीं होगी

ईसाइयों का औरतों के ताल्लुक़ से नज़रिया था कि वह शैतान होती है एक ईसाई विद्वान ने कहा था कि औरतों का ताल्लुक इन्सानी जिन्स से नहीं है। वर्नाफुन्तर पादरी का कथन है जब औरत को देखो तो यह मत समझो कि तुम इन्सानी मख्लूक या दरिन्दे जानवर को देख रहे हो बल्कि जिसे देख रहे हो वह अपनी ज़ात में शैतान है और उसकी जिन बातों को सुनते हो वह सांपो की फुंकार है अंग्रेज़ी कानून की बुनियाद पर पिछली आधी सदी तक औरतों की नागरिकों में गिनती नहीं होती थी उन्हें न तो कोई व्यक्ति गत हक हासिल था यहां तक कि वे कपड़े भी उसकी मिल्कियत में नहीं होते थे जो वह पहने होती थी।

स्काटलैंड सरकार की संसद ने औरतों के लिए इंजील पढ़ने को हराम ठहरा दिया क्योंकि वह नापाक होती है और 566 ई0 में फ्रांस के नागरिकों ने एक सम्मेलन किया जिसका शीर्षक था कि क्या औरत इन्सान होती है अल बत्ता उसे मर्दों की सेवा के लिए पैदा किया गया है। 1805 ई0 से इंगलिश कानून में था कि पति अपनी बीवी

को बेच सकता है और उस समय औरतों की कीमत 6 पौंड तै की गयी थी।

इस्लाम से पहले अरबों के यहां भी औरत जलील थी उसे न मीरास में हिस्सा मिलता था न ही उसे ध्यान देने योग्य ही समझा जाता था न उसे किसी तरह हक़ ही हासिल थे बल्कि अधिकांष अरबों ने अपनी बेटियों को जिन्दा दफन कर दिया था और ऐसा करते थे।

इसके बाद इस्लाम आया ताकि औरत पर हो रहे इन तमाम अत्याचारों का खात्मा करे और दुनिया को यह बताए कि मर्द व औरत बराबर हैं उसे भी कुछ हक़ हासिल हैं जिस प्रकार मर्दों को हासिल हैं अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है ऐ लोगों हमने तुम सबको एक ही मर्द व औरत से पैदा किया है और कुन्बे और कबीले बना दिए हैं इसलिए कि तुम आपस में एक दूसरे को पहचानो अल्लाह के निकट तुम सबमें इज्जत वाला वह है जो सबसे ज़्यादा डरने वाला है यक़ीन मानो कि अल्लाह जानने वाला और बा खबर है। (सूरह हुजरात 13)

एक दूसरी जगह फरमायाः जो ईमान वाला हो मर्द हो या औरत और वह अच्छे काम करे निष्चय ही ऐसे लोग जन्नत में जाएंगे और खजूर की गुठली की दराड़ बराबर भी उनका हक़ न मारा जाएगा। (सूरह निसा 124)

और फरमायाः हमने इन्सान को अपने मां बाप के साथ बेहतर सुलूक करने की वसीयत की है। (सूरह अन्कबूत 8)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमायाः कामिल तरीन मोमिन वह है जिसके अखलाक

अच्छे हों और तुम में सबसे बेहतर वे हैं जिनके अखलाक औरतों के लिए सबसे अच्छे हों।

एक व्यक्ति ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मालूम किया लोगों में मेरे लिए सबसे सेवा योग्य कौन है? आपने फरमाया तुम्हारी मां उसने पूछा फिर कौन? आपने फरमाया तुम्हारी मां उसने फिर पूछा इसके बाद कौन? आपने फरमाया तुम्हारी मां इसके बाद उसने पूछा कि इसके बाद कौन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम्हारा बाप।

छोटकरी में औरतों के बारे में इस्लाम का उसूल यही है

औरतों के सामान्य हक़

इस्लाम में औरतों को कुछ सामान्य हक़ हासिल हैं।

1. सम्पत्ति का हक़–औरतें घर सामान, फैक्टरियां, बागीचे सोना चांदी और अलग अलग प्रकार के जानवरों में से जिन्हें चाहे अपनी मिल्कियत में रख सकती हैं चाहे घर में उन्हें पत्नी की हैसियत हासिल हो या मां की हो, बेटी की हो या बहन की।

2. शादी–पति के चयन खुलअ करने और नुकसान की सूरत में उसे तलाक़ का हक़–हासिल है। ये सारे हक़ औरत को हासिल हैं।

3. इल्म हासिल करने का हक़ इस वजह से कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदेश है इल्म सीखना हर मुसलमान पर फर्ज़ है।

4. वह जितना चाहे अपने माल में से सदक़ा कर सकती है और जितना चाहे अपने नफ़्स पर पति औलाद और मां बाप पर खर्च कर सकती है।

5. जिन्दगी ही में एक तिहाई माल की वसीयत का हक़ भी उसे हासिल है कि उसकी वफात के बाद उसे लागू कर दिया जाएगा और उस पर किसी को आपत्ति करने का हक हासिल नहीं होगा। इस वजह से कि वसीयत एक व्यक्ति गत सम्पत्ति है और यह जिस तरह मर्द को हासिल है उसी तरह औरत को भी हासिल है बशर्ते कि वसीयत एक तिहाई से ज़्यादा माल की न हो।

6. लिबास का हक़ रेशम या सोना जो चाहे औरत वह पहन सकती है जबकि मर्दों के लिए इन दोनों चीज़ों का इस्तेमाल हराम है औरत के लिए सोने के ज़ेवरात और रेशमी लिबास पहनने की एक शर्त यह है कि वह इसे शोभा व श्रंगार को उस आदमी के सामने जाहिर न करे जिसके सामने उसे जाहिर करना नाजायज़ है।

7. औरत को सिंगार करने और सुन्दर व आकर्षक ज़ेवर पहने का हक़ हासिल है।

8. औरत को खाने पीने का हक़ हासिल है। औरत को जो चीज़ पसन्द हो उसे वह खा पी सकती है। खाने पीने के मामले में औरत व मर्द के बीच कोई फर्क़ नहीं है। खाने पीने की जो चीज़ें मुबाह हैं उनमें मर्द व औरत दोनों बराबर हैं और इसी तरह से जो हराम हैं वे दोनों के लिए हराम हैं अल्लाह तआला ने इर्शाद फरमायाः खूब खाओ और पिओ और सीमा से आगे न बढ़ो। (सूरह आराफ 31) यह खिताब आम है और औरत व मर्द दोनों के लिए बराबर है

10. इसे विरासत का हक़ हासिल है। दूसरे लोग भी उसके छोड़े हुए माल में वारिस होंगे।

पति पर औरत के हक़

औरत के खास हक़ों में से उसके कुछ हक़ उसके पति पर हैं। यह हक़ जो पति पर वाजिब हैं ठीक उसी तरह औरत पर भी वाजिब हैं उसके अपने पति के ताल्लुक़ से

ये औरतों के हक़ हैं जो कि पति पर वाजिब हैं इस वजह से कि अल्लाह तआला का फरमान हैः और ओरतों के भी वैसे ही हक़ हैं जैसे उन पर मर्दों के हैं अच्छाई के साथ अतएवं पति पर वाजिब है कि अपने ऊपर लागू अपनी बीवी के हक़ों को माने या यह कि उन हक़ों को बीवी माफ कर दे अतः एक बीवी को जो हक़ हासिल होंते हैं उनमें से कुछ ये हैं ।

1. पति अपनी खुशहाली व तंगी के अनुसार बीवी पर खर्च करेगा या और बीवी को कपड़ा लत्ता लिबास खाना पानी दे और घर का इन्तिज़ाम कराए।
2. बीवी की इज़्ज़त जिस्म व जान माल और दीन की हिफाज़त करेगा।
3. उसे ज़रूरी दीनी मसाइल सिखाएगा यदि वह ऐसा नहीं कर सकता तो मस्जिदों व मदरसों में होने वाली दीनी जलसों में शरीक होकर उसे दीनी मसाइल सीखने की इजाजत देगा।
4. उसके साथ रहन सहन में अच्छा मामला करे। अल्लाह तआला का फरमान है और उनके साथ भले तरीके से रहो सहो। (सूरह निसा–19)

भले तरीके से मामला करना यह भी है कि मुबाशरत के ताल्लुक से उसके हक को दबाया न जाए गाली गलौच अपमानित न करे उसे यातना न दी जाए और भले तरीक़े

से मामला करने में यह भी है कि यदि फ़ितना का डर न हो तो उसे रिष्ते दारों के यहां जाने की इजाज़त दी जाए और उसके जिम्मे ऐसा काम न किया जाए जो उसकी ताक़त से बाहर हो। उससे अच्छी बात चीत की जाए और बेहतर मामला किया जाए इस वजह से कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमायाः तुम में सबसे बेहतर इन्सान वह है जो अपने घर वालों के लिए सबसे बेहतर हो और मैं अपने घर वालों के लिए सबसे बेहतर हूं

पर्दा

इस्लाम ने विनाश व फूट से समाज को बचाने के लिए हर संभव इन्तिजाम किया है और अच्छे अखलाक व बेहतर शिष्टाचार द्वारा उसकी हिफाज़त का आयोजन किया है ताकि लोगों का दिल गन्दगी से पाक साफ और समाज साफ सुथरा रह सके। इसमें शहवत किसी बिगाड़ और नफसानी इच्छाओं को न लड़वाया जाए इस्लाम ने वासना को भड़काने वाली चीज़ों पर पाबन्दी लगा दी है जो बिगाड़ का सबब बनती है।

इसी प्रकार अल्लाह तआला ने औरत के सम्मान और अपमान से उसकी हिफाज़त फसाद करने वालों और कमज़ोर दिल वालों के फितने से उसे बचाने और असमाजिक तत्वों से उसे दूर रखने और बेपर्दगी जेवरात की नुमाइश से जन्म लेने वाले फितने को रोकने की और औरतों के प्रति आदर सम्मान बाकी रखने का आदेश दिया है इस्लाम का पर्दे को वाजिब करने का मक़सद यही है कि औरत को एक खुश हाल जिन्दगी हासिल हो सके। औरत जब उम्रदराज हो जाती है और उसकी सुन्दरता कम हो

जाती है उस समय इन्सान जब सड़कों पर निकलता है और नव उम्र लड़कियों को सज़ा धजा मेक अप में देखता है तो उसका सबसे पहले असर यह होता है कि वह अपनी बीवी के पास आकर उससे उस नवजवान लड़की की तुलना करता है। घरों की बरबादी में इस चीज़ का बड़ा अहम रोल है।

एक से अधिक शादी

एक से अधिक शादी की सोच इन्सानियत के वजूद से जुड़ी हुई है और इसका उल्लेख पुरानी शरीअतों और पुराने समाजों में मिलता है अतः यह चीज़ यहूदियों और ईसाइयों चीनियों और हिन्दुओं आदि सभी के यहां मौजूद थी तादाद की कोई सीमा मुकर्रर नहीं थी एक इन्सान जितनी औरतों से चाहता शादी किया करता था इसकी वजह से औरत भी ज़ुल्म व अत्याचार का शिकार होती थी इस्लाम आया तो उसने औरतों से जुल्म को खत्म किया और तादाद की एक हद मकरर्र की कि चार से ज्यादा शदियाँ नहीं की जा सकतीं।

यहां इस्लाम ने एक मुकर्रर तादाद को मुबाह किया वहीं इसके लिए बहुत सी शर्तें भी लगायी हैं जैसे पत्नियों के बीच न्याय किया जाए और इन शर्तों में कोताही करने पर सख्ती से डराया है और इस पर कड़ी सज़ा रखी है कुछ ऐसी मजबूरियां भी होती हैं जिनकी वजह से इन्सान को ज्यादा पत्नियों की जरूरत पेश आती है मिसाल के तौर पर पत्नी बाँझ हो या बेकार हो या इसी तरह की कोई दूसरी चीज़ हो तो ऐसी हालत में उस औरत के लिए क्या

यह बेहतर होगा कि उसका पति उसे तलाक दे दे या उसे अपने पास रख ले और दूसरी शादी कर ले।
कभी कभी बीवियों की इस तादाद में ही कौमों की बेहतरी होती है जैसे जंग या किसी दूसरी वजह से औरतों की संख्या ज्यादा हो जाए जैसा कि दूसरी विश्व युद्ध में दो करोड़ पचास लाख औरतें बिधवा हुई थीं।
इन औरतों के लिए क्या यह बेहतर है? क्या यह कि बिना पति के वे रहें या उनका दूसरा पति हो दूसरी जंग के बाद जर्मनी में औरतों ने 1954 ई0 में मुजाहिरा किया जिसमें औरतों ने एक कानून बनाने की मांग की जिसके तहत औरतों के लिए दूसरी शादी को मुबाह करार दिया जाए ताकि जर्मन औरतों को बदकारी का पेशा करने से बचाया जा सके।

हम से इस्लाम क्या चाहता है?

इस्लाम मुसलमानों से यह नहीं चाहता कि वह दुनिया से पूरी तरह कट कर रह जाएं और पूरी तरह से अपना संबंध खत्म कर लें, न यह चाहता है कि वे मस्जिदों ही में रहें और उससे बाहर न निकलें और न ही इस्लाम की यह मन्शा है कि इन्सान किसी खोह में जाकर रहने लगे और वहीं अपना पूरा जीवन गुज़ार दे बल्कि इस्लाम तो चाहता है कि मुसलमान समाज व उसके सारे तक़ाजों के मामले में हिस्सा ले और सभ्य व प्रगति करने वाली क़ौमों का पेशवा बन कर रहें माल के मामले में सबसे मालदार बनें और इल्म के मैदान में सबसे आगे हों।
इस्लाम चाहता है कि एक मुसलमान जिस्म के ताल्लुक़ से अपने ऊपर लागू होने वाले हक़ों जैसे खाना और एक्सर

साइज़ आदि चीज़ों को समझे और आराम व जायज़ चीज़ों में भी आनन्द उठाए जो नफ़्स के हक़ हैं उनको भी पूरा करे और अपने बाल बच्चों के ताल्लुक़ से जो हक़ हैं वह उनको भी बराबर अदा करे और उनके साथ बेहतर मामला करे, उनको समझे। औलाद के ताल्लुक़ से जो हक़ हैं उनको भी अदा करें और उनके साथ बेहतर मामला करे, उनको समझे। औलाद के ताल्लुक़ से तरबियत व रहनुमाई और मुहब्बत व स्नेह जैसे हक़ वाजिब होते हैं उनकी अदाएगी करे और सोसाइटी के ताल्लुक़ से अपनी जिम्मेदारी को निभाए और ऐसे काम करे जिसमें उसके लिए भलाई हो और इसी के साथ ही अल्लाह के हक़ तौहीद व आज्ञा पालन को भी पहचाने।

इस्लाम हमें सिखाता है कि अल्लाह तआला कायनात का मालिक है वह इसमें उस मालिक की तरह काम करता है जो अपने शासन के ताल्लुक़ से आज़ाद हो वह मारता और जिन्दा करता है दुनिया में वह सदैव रहने की सुविधा प्रदान कर सकता है? अल्लाह ही बीमार करता है वही ठीक करता है क्या कोई अपनी ज़ात से मौत को रोक सकता है? और क्या अल्लाह ने जिसे ठीक होने से महरूम कर रखा हो, उसे दुनिया का कोई इन्सान ठीक कर सकता है? अल्लाह ही माल देता है और वही तंग दस्ती और गरीबी का शिकार बना देता है। बाढ़ वही भेजता है और सूखे से भी वही दोचार करता है। हर साल हम देखते हैं कि कुछ इलाकों में बाढ़ आती है और कुछ दूसरे इलाक़ों में सूखा पड़ जाता है। कौन है वह ज़ात जिसने कुछ लोगों पर पानी ज्यादा कर दिया तो वे पानी पर

शिकवा करने लगे और कुछ पर पानी कम कर दिया तो वे लोग पानी की इच्छा करने लगे? किसी को लड़का और किसी को लड़कियां कौन देता है? और किसी को बांझ कौन बनाता है? क्या जिन्हें लड़कियां मिली हैं वे उन्हें लड़का बना सकते हैं या जो बांझ हैं वे बच्चे को जन्म दे सकते हैं?

अल्लाह तआला ही कुछ लोगों को कम उम्री में मौत से दोचार कर देता है और कुछ लोगों की उम्र को बढ़ा देता है यहां तक कि वे लोग बुढ़ापे को पहुंच जाते हैं। अल्लाह कुछ इलाकों में सर्दी और कुछ इलाकों में गर्मी भेजता है किसी इलाके को भूकम्प से दो चार कर देता है ये सारी चीज़ें देखने में आती रहती हैं। इन्सान इन चीज़ों को दूर नहीं कर सकता है और न इन्हें रोक सकता है यही वजह है कि बहुत से लोग इस बात को स्वीकारते हैं कि इस काम काज का मतलब व चलाने वाला अल्लाह ही है वही कायनात के सारे कामों को अंजाम देता है लेकिन क्या एक इन्सान के मोमिन होने के लिए यह मान लेना ही काफी है?

नहीं इस बात को भी दिल से मान लेना ज़रूरी है कि अल्लाह ही सही अर्थों में उपास्य है जब अल्लाह की मौजूदगी को मान लेते हो और इस बात का भी विश्वास कर लेते हो कि वह दोनों जहान का पालनहार है और हर चीज़ की मिल्कियत उसी की है तो उसके साथ किसी दूसरे की उपासना न करो और किसी प्रकार की उपासना को उसके सिवा किसी दूसरे के लिए अंजाम न दो यही तो इस्लाम है।इस बात पर ईमान लाना कि अल्लाह ही दोनों जहान का पालनहार है और वही इस कायानात का

मालिक है। ये दिल में मौजूद भले कामों में से एक काम है और यह ऐसा अक़ीदा है जिसे हर इन्सान मानता है जहां तक अल्लाह को उपास्य मानने की बात है तो उसके लिए केवल एतिकाद ही काफी नहीं है इससे बढ़कर अमल करना इबादत करना और इबादत को केवल अल्लाह के लिए अंजाम देना ज़रूरी है। यदि इन्सान अल्लाह की इबादत से इन्कार करता है या उसके साथ किसी दूसरे की भी इबादत करता है तो वह मोमिन नहीं होगा। यदि वह इस बात को मानें कि अल्लाह ही दोनों जहान का पालन हार है और कायनात का मालिक है। जिस दिल में यह विश्वास व ईमान होता है कि हर प्रकार का फायदा व नुकसान अल्लाह का है पूरी मुहब्बत हर तरह का भय और पूरी पूरी फरमाबरदारी अल्लाह ही का हक़ है। वह दिल के आदर सम्मान से ओत प्रोत होगा और अल्लाहो अकबर का मतलब महसूस कर पाएगा अतएवं अल्लाह के सामने हर चीज़ उसके लिए तुच्छ दिखाई देगी।

इन्सानी आमाल में कुछ चीज़ें ऐसी हैं जो सर्वथा आदर सम्मान के मामले पर दलालत करती हैं जैसे दुआ नमाज़ रुकूअ सजदा नज़र व नियाज़, जबह, तसबीह व तहलील। यही वजह है कि एक मोमिन इन चीज़ों को केवल एक अल्लाह ही के लिए अंजाम देता है वह अल्लाह के सिवा किसी दूसरे के लिए नमाज़ नहीं पढ़ता, अल्लाह ही के लिए रुकूअ व सजदे करता है और अल्लाह के सिवा किसी दूसरे के लिए सुबहा–न–क अर्थात तेरी ज़ात पाक है नहीं कहता है और अल्लाह ही से गुनाहों की माफी की

दरख्वास्त करता है क्योंकि ये सारी चीज़ें सर्वथा आदर सम्मान के मज़ाहिर हैं जो इबादत का मग्ज़ है।

इस्लाम पिछले तमाम गुनाहों को माफ कर देता है

अल्लाह की बहुत बड़ी कृपा व उसका एहसान है कि उसने इस्लाम को पिछले तमाम गुनाहों को माफ करने वाला बनाया अतः एक काफिर इन्सान जब इस्लाम स्वीकार करता है तो उसने कुफ्र के दौरान जो कुछ किया होता है अल्लाह सभी को माफ कर देता है और वह गुनाहों से पाक साफ हो जाता है।

जिस आदमी को अल्लाह ने हराम माल कमाने के बाद इस्लाम का सौभाग्य प्रदान किया हो उसके लिए वह माल भी हलाल हो जाता है उसे इस्तेमाल करने, अपने पास रखने, उससे सदक़ा करने और उसे शादी में इस्तेमाल करने में उसे गुनाह नहीं मिलेगा क्योंकि अल्लाह ने कुरआन मजीद में इर्शाद फरमाया हैः पिछले जितने गुनाह हैं वे तमाम माफ कर दिए गऐ हैं। (सूरह अन्फाल– 38)

अलबत्ता इन्सान ने जिस माल को अपने साथी से हड़पा हो तो उसके लिए जरूरी है कि उस माल को लौटा दे अलबत्ता जिस माल को इस्लाम से पहले लोगों की अपनी खुशी से कमाया हो चाहे हराम तरीके से कमाया हो जैसे कि सूद मादक पधार्थ ड्रग्स आदि के ज़रिये कमाया हो तो इस्लाम स्वीकार करने के बाद उस माल का इस्तेमाल हलाल होगा

मुसलमान बन्दे का गुनाह जितना भी ज्यादा हो जाए इस्लाम में तौबा का दरवाज़ा खुला होता है और इन्सान को हमेशा तौबा ही की जरूरत पड़ती है इस वजह से कि हर इन्सान गलती का पुतला है और बेहतर गलती करने

वाले वे हैं जो तौबा का दामन थामते हैं जैसा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया है चूंकि इन्सान मासूम नहीं है इसी वजह से अल्लाह ने उसके लिए तौबा का दरवाज़ा खोल रखा है और उसे तौबा करने का हुक्म भी दिया है। अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है कह दो ऐ मेरे बन्दो जिन्होंने अपनी जानों पर ज्यादती की हैः तुम अल्लाह की रहमत से निराश न हो जाओ निश्चय ही अल्लाह सारे गुनाहों को बख्श देता है वह हक़ीक़त में बड़ा रहमत वाला है। (सूरह जुमर 53)

इस्लाम में कैसे दाखिल हों?

जब आपने दीन इस्लाम की महानता को जान लिया और आपको यह मालूम हो गया कि अल्लाह के यहां नजात का यह अकेला रास्ता है और इसमें दाखिल होना सभी लोगों के लिए जरूरी है और उसको अपनाए बिना कियामत के दिन जन्नत में दाखिले और जहन्नम से नजात पाने का दूसरा कोई रास्ता नहीं होगा तो आप सवाल कर सकते हैं कि इस्लाम में दखिल होने का तरीक़ क्या है इसका जवाब यह है कि जब आप इस्लाम स्वीकार करना चाहते हैं तो आप कलिमा षहादत की गवाही दें अर्थात इस बात को सच्चे दिल से मानें कि अल्लाह के सिवा कोई वास्तविक उपास्य नहीं और मुहम्मदुर्रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं कलिमा शहादत इला इल्ललाह मुहम्मद रसूलुल्लाह को जबान से अदा करें, इसके बाद इस्लामी षिष्टाचार सीखें और उनको अंजाम दें जैसे आप नमाज़ कायम करें आदि इस्लामी किताब घरों व मर्कज़ों में इस ताल्लुक से लिखी गयी किताबें बहुत अधिक हैं

विषय सूची

क.स.		पृष्ठ
1	भूमिका	3
2	पैदा किए जाने का मक़सद	5
3	इस्लाम क्या है?	6
4	इन्सानो की पैदाइश	6
5	मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम	10
6	मुहम्मद का नसब और आपकी जीवनी	11
7	रसूलुल्लाह के बेहतर अख़लाक़	19
8	आप के मोज़िजों का बयान	23
9	इमान के अरकान	26
10	इस्लाम में इबादत की हक़ीक़त	32
11	इस्लाम के अर्कान	33
12	इस्लाम के अर्कान का मतलब	34
13	इस्लाम की खासियतें	36
14	इस्लाम की कुछ खूबियां	44
15	वे बातें जिनसे इस्लाम रोकता है।	46
16	आख़िरत का दिन	49
17/18	कब्र / कियामत की निशानियों का बयान	52/55
19	जहन्नम और उसके अज़ाब का बयान	58
20	जन्नत और उसकी नेमतों का बयान	60
21	इस्लाम में औरत का स्थान व दर्जा	62
22	औरतों के सामान्य हक़	65
23	पति पर औरत के हक़	67
24/25	पर्दा / एक से अधिक शादी	68/69
26	हम से इस्लाम क्या चाहता है?	70
27	इस्लाम गुनाहों को माफ कर देता है	74
28	इस्लाम में कैसे दाखिल हों?	75